أعوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَٰنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّـهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

مُصنّف ابنِ ابی شیبہ

मुसन्नफ इब्न-ए-अबीशैबआ

जंग-ए-जमल , जंग-ए-सिफ्फीन और जंग-ए-नहरवान से मुत्तालिक 187 अहादीस और आसार

किताब-उल-जमल (كتاب أل جمل)

(हदीस नंबर 38912 से 39098)

مؤلف

الأمام ابی بکر عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ العبسی الکوفی

المتوفی ۲۳۵ھ

संकलनकर्ता

अल इमाम अबीबकर अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबीशैबआ अलअब्सी अलकूफ़ी

अल मुतवफ़्फ़ा 235 हि.

जंग-ए-जमल का बयान

(38912) आसिम बिन कुलीब जर्मी फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद मुहतरम बयान करते हैं कि हमने तोज (शहर) का मुहासिरह किया जबकि हमारे लश्कर के अमीर बनी सलीम क़बीला के मजाशअ बिन मसऊद थे । जब हम इस शहर को फ़तह कर चुके तो मेरे बदन पर एक बोसीदह कुरता था, तो मैं अजम के उन मक़्तूलीन की तरफ़ गया जिनको हमने तहतैग़ किया था। एक मक़्तूल की क़मीज़ मैंने उतार ली जिस पर ख़ून के निशान थे मैंने इसे पत्थरों के दर्मियान धोया और ख़ूब रगड़ कर इसे अच्छी तरह साफ़ कर लिया और फिर ज़ेबतन करके आबादी की तरफ़ गया और माले ग़नीमत से एक सूई और धागा लिया और अपनी फटी हुई क़मीज़ की सिलाई की। मजाशअ बिन मसऊद खड़े हुए और फ़रमाने लगे "ऐ लोगो! तुम किसी भी शैए मे ख़ियानत ना करो, जिसने ख़ियानत की, क़यामत के दिन उसे हिसाब देना पड़ेगा"। अगरचे धागा ही क्यों ना हो। पस मैंने कमीज़ उतार दी और अपनी कमीज़ को फाड़ने लगा ताकि (माले ग़नीमत का) धागा टूट ना जाए फिर मैं सूई और क़मीज़ को लेकर माले ग़नीमत के पास पहुंचा और मैंने ये चीज़ें वापस रख दीं । फिर मैंने लोगों को इस दुनिया में देखा कि वो कई कई वसक़ में ख़ियानत करते हैं , जब मैंने उनसे कहा कि यह क्या है ? तो वो जवाब देते है कि माले ग़नीमत में हमारा इससे भी ज़्यादा हिस्सा बनता है । आसिम कहते हैं कि मेरे वालिद माजिद ने ख़वाब देखा जब वो ख़िलाफ़त उस्मान के ज़माने में तोज के मुहासरा के लिए गए हुए थे। मेरे वालिद ने जब ये ख़वाब देखा तो बड़े वाज़ेह तरीक़े से देखा मेरे वालिद ने नबी करीम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) के सोहबत की सआदत भी हासिल की थी। उन्होंने ख़वाब में देखा कि एक मरीज़ आदमी है । इसके पास लोग झगड़ रहे हैं, और इनके हाथ एक दूसरे की तरफ़ उठ रहे हैं ,और आवाज़ें बुलन्द हो रही हैं। इनके क़रीब एक औरत सब्ज़ लिबास में मल्बूस बैठी है और ऐसे मालूम हो रही है जैसे वो इनके दर्मियान सुलाह कराने की ख़वाहां (इच्छुक) है , इसी इस्ना में एक आदमी खड़ा होता है और अपने जैसे के अस्तर पलटता है , फिर कहता है ऐ मुसलमानों! क्या तुम्हारा इस्लाम बोसीदा हो गया जबकि यह नबी करीम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) का कुर्ता है जो अभी पुराना नहीं हुआ , इसी दौरान दूसरा शख़्स खड़ा हुआ और क़ुरआन-ए-करीम की एक जिल्द को

पकड़ कर झटका जिसकी वजह से क़ुरआने करीम के अवराक़ फैलने लगे। आसिम कहते हैं कि मेरे वालिद ने ये ख़्वाब तअबीर बताने वालों के सामने बयान किया मगर कोई इसकी तअबीर ना बता सका बल्कि तअबीर बताने वाले ये ख़्वाब सुन कर घबरा जाते थे।
आसिम कहते हैं कि मेरे वालिद ने फ़रमाया कि मै बसरा आया तो देखा कि लोग लश्कर तैयार कर रहे हैं मैंने पूछा इन्हें क्या हुआ तो मुझे लोगों ने बताया कि इन लोगों को ये इत्लाअ मिली है कि कुछ लोग हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की तरफ़ गए हैं (ताकि इनके ख़िलाफ़ शोरश बरपा करें) अब ये लोग (अहले बसरा) हज़रत उसमान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की मदद के लिए जा रहे हैं। फिर इब्न-ए-आमिर खड़ा हुआ और कहने लगा कि अमीरुल मोमिनीन ने सुलह कर ली है, और उनके पास जाने वाला लश्कर लौट चुका है (ये सुन कर) अहले बसरा भी अपने घरों को लौट गए इसके बाद हज़रत उसमान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की शहादत ने इनको सख़्त रन्ज में मुब्तला कर दिया। मैंने इतनी कसीर तादाद में बूढ़े लोगों को इतना रोते हुए पहले भी नहीं देखा कि इनकी दाढ़ियां आंसूओं से तर हों। फिर थोड़ा ही अर्सा गुज़रा कि हज़रत ज़ुबैर और तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) बसरा तशरीफ़ लाए फिर कुछ ही अरसा बाद हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) तशरीफ़ लाए और ज़ीक़ार (जगह का नाम) में ठहरे। क़बीले के दो बूढ़े मुझसे कहने लगे कि आओ उनके {अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ)} पास चलते और देखते हैं कि ये क्या दअवत देते हैं और क्या मोक़्क़िफ़ लेकर आए हैं। पस हम निकले और उनकी तरफ़ बढ़े जब हम उनके क़रीब हुए तो उनके गिरोह हमें नज़र आने लगे। अचानक हमारी एक नौजवान पर नज़र पड़ी जो सख़्त खाल वाला था और लश्कर के एक जानिब था।
जब मैंने उसे देखा तो ये उस औरत से बहुत मुशाबहत रखता था जिसको मैंने ख़्वाब में मरीज़ के पास बैठे हुए देखा था। मैंने अपने साथियों को कहा कि अगर उस औरत (जिसको मैंने ख़्वाब में मरीज़ के सरहाने बैठे हुए देखा था) का कोई भाई हो तो ये उसी का भाई है। मेरे साथ जो दो बुज़ुर्ग शख़्स थे इनमें से एक कहने लगा आपकी इस शख़्स से क्या ग़र्ज़ है और मेरी कोहनी को पकड़ कर दबा दिया। वो जवान हमारी गुफ़्तगू सुन कर कहने लगा कि आप क्या फ़रमा रहे हैं , मेरे एक साथी ने कहा कि कुछ नही आ जाएं। मगर इस नौजवान ने इसरार किया कि आप बताएं आप क्या कह रहे थे। पस मैंने इसको अपना ख़वाब सुना दिया तो जवान कहने लगा ये ख़्वाब आपने देखा है फिर वो घबराया और घबराहट में यही कहता रहा कि ये ख़्वाब आपने देखा है? ये ख़वाब आपने देखा है? इसी तरह कहता रहा हत्ता

कि इसकी आवाज़ हम से दूर होते होते मुन्क़ता हो गई। मैंने किसी से पूछा ये कौन शख़्स था ? जो हमसे मिला तो उसने जवाब दिया 'मुहम्मद बिन अबीबकर' आसिम के वालिद मुहतरम फ़रमाते हैं कि फिर हमने पहचान लिया कि वो औरत (जो ख़वाब में मरीज़ के सरहाने बैठी थी) आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) थी।

पस जब मैं लश्कर में पहुंचा तो मैंने वहां अरब के सबसे ज़्यादा दाना इन्सान को पाया यानी कि हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) को । आसिम के वालिद मुहतरम बयान करते हैं "अल्लाह की क़सम हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) मुझसे मेरी क़ौम के मुताल्लिक़ गुफ़्त व शनीद करना चाहते थे" मैंने सोचा कि वो तो मेरी क़ौम को मुझसे ज़्यादा जानते हैं। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया कि बसरा में बनी रासिब बनी क़दामा से ज़्यादा हैं नां ! मैंने कहा जी हां। उन्होंने मुझसे सवाल किया कि आप अपनी क़ौम के सरदार हैं मैंने जवाब दिया जी नहीं । अगरचे मेरी भी क़ौम इताअत करती है मगर मुझसे बड़े और क़ाबिल-ए-इताअत सरदार भी क़ौम में मौजूद हैं। पस हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने मुझसे दर्याफ़्त किया बनी रासिब का सरदार कौन है मैंने कहा फ़लां फिर इन्होंने बनी क़दामा के बारे में सवाल किया कि इनका सरदार कौन है मैंने जवाब दिया फ़लां। फिर फ़रमाया कि मेरे दो ख़त इन दोनों सरदारों को पहुंचा दोगे, मैंने कहा जी ज़रूर, फिर फ़रमाने लगे क्या तुम लोग बैअत नहीं करोगे हज़रत आसिम के वालिद माजिद (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) फ़रमाते हैं कि मेरे साथ जो बुज़ुर्ग थे उन्होंने बैअत करली।

पस वो लोग जो उनके पास थे नाराज़ हुए, मेरे वालिद ने अपने हाथ के इशारे से कुछ कहा और अपने हाथ को बन्द किया और हरकत दी गोया कि इन लोगों में एक तरह की ख़फ़त थी पस इन्होंने कहना शुरू किया 'बैअत कर लो' 'बैअत कर लो' इन लोगों के चहरे पर सज्दों के बड़े वाज़ेह निशान थे। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया इस आदमी को छोड़ दो फिर आसिम के वालिद माजिद (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) गोया हुए कि मुझे मेरी क़ौम ने रहनुमा बना कर भेजा है इसलिए मैं चाहता हूं कि मैं उनको इस तमाम मामले से आगाह कर दूं जो मैंने देखा है अगर वो आपके हाथ पर बैअत के लिए तैयार हुए तो मैं भी आपसे बैअत कर लूंगा और अगर उन्होंने आपसे रुगरदानी की तो मैं भी आपसे अलैहदा हो जाऊंगा। तो हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया 'देखो तुम्हारी क़ौम ने तुम्हे रहनुमा बना कर भेजा है पस आपने बाग़ और कुंआ देख लिया फिर भी तुम अगर अपनी क़ौम से घास और पानी की तलाश का कहो तो अगर तुम्हारी क़ौम ने इन्कार कर दिया तो फिर आप ख़ुद पानी और घास तलाश ना कर

सकोगे'। मैंने इनकी उन्गली पकड़ी और कहा हम आपसे बैअत करते हैं कि हम आप की इताअत करेंगे उस वक़्त तक जब तक अल्लाह तआला की इताअत पर क़ाइम रहेंगे। पस अगर आपने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की तो फिर हमारे ऊपर आपकी इताअत लाज़िम नहीं। तो हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने जवाब दिया ठीक है और आवाज़ को लम्बा किया। पस मैंने इनके हाथ पर हाथ मारा फिर मुहम्मद बिन हातिब की तरफ़ मुतवज्जा हुआ जो लोगों के एक जानिब बैठे थे हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया 'बसरा मे अपनी क़ौम की तरफ़ जाकर मेरे दोनों ख़त और दोनों बातें इन तक पहुंचा देना'। फिर मुहम्मद बिन हातिब हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की तरफ़ आए और कहने लगे। जब मैं अपनी क़ौम की तरफ़ आया तो मेरी क़ौम के लोग पूछने लगे कि उनका हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) के बारे में क्या ख़याल है तो मैंने जवाब दिया कि हज़रत (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) के आप पास के लोग तो इन्हें बुरा भला कह रहे थे मगर हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की पेशानी से ना पसन्दीदगी का इज़्हार हो रहा था बवजा इन लोगों के बुरा भला कहने लगे।

तो मुहम्मद बिन हातिम ने कहा ऐ लोगों ठहर जाओ अल्लाह की क़सम ना तुम से मैंने सवाल किया है और ना तुम्हारे बारे में मुझसे सवाल किया गया है पस हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया कि तुम हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) के बारे में मेरी सबसे अच्छी बात उनको बता देना कि वो अहले ईमान में से थे नेक आमाल करने वाले थे फिर अल्लाह से डरने वाले थे और हुस्ने सुलूक करने वाले थे और अल्लाह अहसान करने वालों को पसन्द करता है । आसिम कहते हैं कि मेरे वालिद ने फ़रमाया मैं वहां ही था कि अहले कूफ़ा मेरे पास आए और मुझसे मुलाक़ात करने लगे फिर कहने लगे कि क्या आप देख रहे हैं हमारे बसरा के भाई हमसे क़िताल करने चाहते हैं ये बात इन्होंने हंसते हुए और ताअजुब करते हुए कही फिर कहने लगे अल्लाह की क़सम अगर हमारी इन से मुड भेड़ हुई तो हम ज़रूर इनसे अपना हक़ लेंगे आसिम के वालिद माजिद फ़रमाते हैं कि वो ऐसे लग रहे थे जैसे क़िताल नहीं करेंगे मैं हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) का ख़त लेकर निकला पस जिन दो सरदारों की तरफ़ हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने ख़त लिखा था कि इन में से एक ने ख़त लिया और जवाब दिया फिर मुझे दूसरे का पता बताया गया लोग इसे कुलीब कहते थे मुझे इजाज़त मिली और मैंनें ख़त इस तक पहुंचाया और बताया के ये ख़त हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) का है और मैंने हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) को बताया था कि आप क़ौम के सरदार हैं पस इसने ख़त लेने से इन्कार कर

दिया और कहा मुझे आज सरदारी की कोई ज़रूरत नहीं बेशक तुम लोगों की सरदारी आज ऐसी है जैसे गन्दगी, कमीनों और मश्कूकुल्नसब लोगों की सरदारी। फिर कहा आप इन्हें कह देना मुझे सरदारी की कोई ज़रूरत नहीं और ख़त का जवाब देने से इंकार कर दिया।

कहते हैं कि अल्लाह की क़सम मैं हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) तक वापस पहुंच भी नहीं पाया था कि दोनों लश्कर एक दूसरे के क़रीब हो गए और लोग लड़ने के लिए सीधे हो गए। पस हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के साथ जो क़ुराअ थे वो सवार हुए जब नेज़ाबाज़ी शुरू हुई । फिर मैं हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से उस वक़्त मिला जब लोग क़िताल से फ़ारिग़ हो चुके थे। मैं अश्तर के पास गया वह ज़ख़्मी थे। आसिम कहते हैं हमारे और इसके माबैन औरतों की तरफ़ से कोई रिश्तेदारी थी जब अश्तर ने मेरे वालिद माजिद की तरफ़ देखा जबकि उसका घर उसके साथियों से भरा हुआ था। अश्तर ने कहा ऐ कुलीब तुम हम सब से ज़्यादा अहले बसरा को जानते हो। आप जाइए और मेरे लिए एक सरीअउल हरकत ऊंट ख़रीद लो मैंने एक सरदार से एक जवान ऊंट सो दिरहम के औज़ ख़रीदा। फिर कहने लगा इसे आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के पास ले जाओ और इनसे कहना आपका बेटा मालिक आपसे सलाम अर्ज़ कर रहा है कि ये ऊंट क़बूल कर लीजिए और इस पर सवार होकर अपने ऊंट की जगह पहुंच जाएं। पस हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया इस पर सलामती ना हो और वो मेरा बेटा नहीं है और ऊंट लेने से इन्होंने इन्कार कर दिया। मैं वापस इसके पास आया और इसे हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) का फ़रमान पहुंचा दिया।

कुलीब कहते हैं कि वो सीधा होकर बैठ गया फिर अपनी कलाई से आसतीन हटाई फिर कहने लगा हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) मरने वाले की मौत पर मुझे मलामत कर रही हैं मैं तो क़लील सी जमाअत में आया था। फिर अचानक इब्न अताब आए और मुझसे मुक़ाबला किया और कहने लगे तुम मुझे और मालिक को क़त्ल कर दो पस मैंने मारा और वो बहुत बुरी तरह गिरा फिर इब्न ज़ुबैर की तरफ़ लपका उन्होंने मुझे कहा कि मुझे और मालिक को क़त्ल कर दो और मैं पसन्द नहीं करता कि वो ये कह दे कि मुझे और अश्तर को क़त्ल कर दो और ना ये पसंद करता हूं कि हमारी औरतें गुलामों को जन्म दें आसिम कहते हैं कि मेरे वालिद माजिद फ़रमाते हैं कि फिर अकेले में उनसे मिला और उनसे कहा कि आप के गुलाम जनने वाले क़ौल ने आपको क्या फ़ायदा दिया वो मुझसे क़रीब हो गया और कहने लगा कि आप बसरा {हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ)} के बारे में मुझको वसीयत किजिए क्योंकि मेरा मक़ाम

आपके बाद ही है । कुलीब ने इसे कहा कि अगर साहिब-ए-बसरा ने आपको देखा तो आप का ज़रूर इकराम करेंगे। आसिम बिन कुलीब के वालिद माजिद कहते हैं कि वो अपने आप को अमीर समझने लगा। पस मेरे वालिद मुहतरम वहां से उठे और बाहर आ गए तो मेरे वालिद को एक आदमी मिला इसने ख़बर दी कि अमीरुल मोमिनीन ने ख़ुत्बा दिया और अब्दुल्लाह इब्न अब्बास को बसरा का आमिल मुक़र्रर किया और हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) फ़लां दिन शाम की तरफ़ जाने वालें हैं। पस मेरे वालिद मुहतरम को कहा कि ये बात तुमने ख़ुद सुनी है तो मेरे वालिद ने कहा नहीं तो अश्तर ने मेरे वालिद को डांटा और कहा बैठ जाओ बेशक ये झूठी ख़बर है मेरे वालिद कहते हैं कि मैं इसी जगह बैठा था कि एक और शख़्स ने ऐसी ख़बर दी। अश्तर ने इससे भी यही सवाल किया कि क्या तुमने ख़ुद देखा है इसने कहा नहीं फिर इसे भी कुछ कहा ये भी तुम्हारे जैसी ख़बर लेकर आया है जबकि मैं लोगों की एक सिम्त में बैठा था। थोड़ी ही देर बाद अताब तग़लबी आया इसकी गरदन में तलवार लटक रही थी। ये तुम्हारे मोमिनीन का अमीर है ? फ़लां फ़लां दिन वो शाम की तरफ़ जाने वाला है। अशतर ने इससे कहा ऐ काने! तुने ये बात ख़ुद सुनी है? उसने कहा हां अश्तर ! अल्लाह की क़सम मैंने ख़ुद अपने दोनों कानों से सुनी है। अश्तर मुसकुराया फिर कहने लगा अगर ऐसा हुआ तो हम नहीं जानते कि हमने शैख़ (अमीरुल मोमिनीन) को मदीना में क्यों क़त्ल किया? फिर अपने लश्करियों को सवार होने का हुक्म दिया और ख़ुद सवार हुआ कहने लगा कि इनका मआविया (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ही की तरफ़ इरादा है। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) इसके लश्कर से फिक्रमन्द हुए फिर इसकी तरफ़ ख़त लिखा कि मैंने तुमको अमीर इसलिए नहीं बनाया कि मुझे अहले शाम (जो तुम्हारी ही क़ौम है) के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद दरकार है । वरना अमीर नहीं बनाने की ये वजह नही थी कि तुम इसके लिए अहल नही थे । पस फिर लोगों में कूच करने के लिये निदा लगाई पस अश्तर खड़ा हुआ यहां तक के सबसे आगे वाले लोगों के साथ मिल गया। उसने इनके लिए पीर का दिन मुक़र्रर किया था मेरे ख़याल के मुताबिक़ । पस जब अश्तर ने वो कर लिया जो करना था तो इसने लोगों में इससे पहले कूच करने के लिए आवाज़ लगवाई।

(38913) हज़रत आअमश ने एक आदमी से नक़ल किया है उसका नाम भी ज़िक्र किया था कि मैं यौम जमल को जंग में हाज़िर हुआ था । मैं जब भी वलीद के घर में दाख़िल होता हूं , यौम जमल मुझे ज़रूर याद आता है जिस दिन तलवारें ख़ोदों पर लग रही थीं। हज़रत

अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को मैंने देखा तलवार उठाए हुए तलवार चलाते हुए आगे जाते फिर वापस लौटते और कहते मुझे मलामत ना करो इसे मलामत करो फिर लौटते और इसे सीधा करते।

(38914) मैसरा अबी जमीला से रिवायत है कहते हैं कि मैं पहली दफ़ा खवारिज से यौमे जमल को मिला वो कह रहे थे 'हमारे लिए अल्लाह ने हलाल नहीं किया इनके ख़ून को और हम पर इनके औलाद व अमवाल को हराम किया है' । कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया मेरे अहल व अयाल सीने और गर्दन पर हैं (यानी जंग में पेश पेश हैं) और तुम्हारे लिए पांच पांच सौ दिरहम माले ग़नीमत हो जो तुम्हे अहलो अयाल से बेनियाज़ कर देगा।

(38915) हज़रत हरीस बिन मख़शी से रिवायत है कि जंग ए जमल के दिन हज़रत अली का झंडा सियाह (काला) था और इनके हरीफ़ का झंडा ऊंट था।

(38916) हज़रत हुज़ैफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से रिवायत है कि उन्होंने एक शख़्स से कहा "तुम्हारी मां ने क्या किया ?" उसने कहा वो तो मर चुकी । हज़रत हुज़ैफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया तुम अन्क़रीब उससे क़िताल करोगे वो शख़्स बड़ा हैरान हुआ हत्ता कि हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) (जंगे जमल के लिए) निकलीं।

(38917) हज़रत शअबी से मन्क़ूल है कि हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने जंगे जमल के दिन जांबहक़ होने वालों की मीरास (मुसलमानों के हिस्सों की तरह) तक़्सीम की । औरत के लिए आठवां हिस्सा और बेटी को उसका हिस्सा दिया और बेटे को उसका हिस्सा और मां को उसका हिस्सा दिया।

(38918) हज़रत अबू बख़्तरी से रिवायत है कि हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से सवाल किया गया अह्ले जमल के बारे में कहते हैं कि उनसे पूछा गया क्या वो मुशरिक थे ? हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने जवाब दिया नहीं ! शिर्क से तो वो भागे थे। फिर पूछा गया कि क्या वो मुनाफ़िक़ थे ? उन्होंने फ़रमाया नहीं मुनाफ़िक़ लोग तो अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम । फिर पूछा गया कि फिर वो कौन थे ? हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया हमारे भाई थे , जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की।

(38919) हज़हत शक़ीक़ बिन सलमा (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से रिवायत है कि जंग ए जमल के दौरान हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने ना किसी को क़ैदी बनाया और ना ही किसी ज़ख्मी को क़त्ल किया।

(38920) हज़रत उबैद ख़ैर (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से रिवायत है कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने जंग जमल में (जीतने के बाद) ना तो कोई कैदी बनाया और ना ख़ुमस लिया। लोगों ने अर्ज़ किया! क्या आप इनके मालों को पांच हिस्सों में तक़सीम नहीं करेंगे तो हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया के हज़रत आयशा (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا) के बारे में मश्वरा कर लो तो लोगों ने इन्कार किया (फिर माले ग़नीमत से दस्तब्दार हो गए)

(38921) अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रिवायत करते हैं कि अश्तर और इब्न ए ज़ुबैर का (जंग जमल में) आमना सामना हुआ। इब्न ए ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ)फ़रमाते हैं कि मैंने अश्तर पर एक वार भी ना किया यहां तक कि उसने पांच या छे वार मुझ पर किये और मुझे पाऊं में गिरा दिया फिर कहने लगा अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारी रसूले करीम(صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ) से रिश्तेदारी नहीं होती तो तुम्हारा एक अंग भी सलामत ना छोड़ता। हज़रत आयशा (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا) ने ये मन्ज़र देख कर पुकारा हाए असमा! जब अश्तर दूर हो गया तो हज़रत आयशा (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا) ने इस शख़्स को दस हज़ार दिरहम दिया जिसने आकर ये ख़ुश ख़बरी सुनाई थी के अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ज़िन्दा हैं।

(38922) अब्बदुल्लाह बिन फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद मुहतरम ने मुझे ये ख़बर दी थी कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने जंग ए जमल के दिन फ़रमाया हम इन लोगों के साथ हुसन ए सुलूक करेंगे बवजा لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ की शहादत के, और हम आबाओ अज्दाद को बेटों का वारिस बनाएंगे।

(38923) साबित बिन उबैद नक़ल करते हैं कि मैंने अबू जाअफ़र(رَحِمَهُ ٱللَّهُ) को कहते हुए सुना के जंगे जमल में शरीक होने वालों ने कुफ़्र नहीं किया।

(38924) उम्रो बिन मरह से मरवी है कि मैंने सवैद बिन हारिस को ये कहते हुए सुना हमने जंग ए जमल के दिन देखा के हमारे नेज़े और इनके नेज़े आपस में ऐसे घुसे हुए थे कि अगर आप लोग चाहते तो इन पर चल सकते थे। कुछ लोग अल्लाहुअकबर के नारे बुलंद कर रहे थे और कुछ सुब्हानल्लाह अल्लाहुक्बर के नारे लगा रहे थे और कुछ लोग कह रहे थे

कि इसमें कोई शक नहीं काश मैं इस जंग में शरीक ना होता। और अब्दुल्लाह बिन सल्मा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) फ़रमाया करते थे मुझे ये बात भली मालूम नहीं होती कि मैं जंग ए जमल में शरीक नहीं हुआ। मैं पसंद करता हूं हर इस हाज़िर होने की जगह हाज़िर हूं जहां हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) शरीक हों।

(38925) क़ैस (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) रिवायत करते हैं कि मरवान बिन हकम ने हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के घुटना में एक तीर मारा जंग जमल के दिन। पस इससे ख़ून बहना शुरु हुआ । जब सब इसको रोकते रुक जाता और इसे छोड़ देते फिर ख़ून जारी हो जाता पस हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया इसे छोड़ दो। जब लोगों ने ज़ख़्म के मुंह को रोकना चाहा तो घुटना फूल गया हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया इसे छोड़ दो ये तीर अल्लाह अज़वजल की तरफ से था फिर आपका इन्तक़ाल हो गया। हमने इन्हें कलाअ (दरया किनारे एक बाज़ार) के एक जानिब दफ़न कर दिया। इनके घर वालों में से किसी ने इन्हें ख़वाब में देखा कि वो फ़रमा रहे हैं ! क्या तुम मुझे पानी से निजात नहीं दिलाओगे ? मैं पानी में डूब चुका हूं ये कलिमात तीन दफ़ाअ फ़रमाए। इनकी क़बर को खोदा गया तो वो सब्ज़ हो चुके थे सलक़ (सब्ज़ी) की तरह। लोगों ने इनसे पानी को दूर किया फिर इनको वहां से निकाला तो जो हिस्सा ज़मीन से मिला हुआ था इनकी दाढ़ी और चहरे में से उसको ज़मीन ने खा लिया था। उनके लिए अबू बकरहा की आल के घरों में से एक घर दस हज़ार दिरहम का ख़रीदा और इसमें हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को दफ़न किया।

(38926) क़ैस (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से रिवायत है जब आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) बनू आमिर के एक चश्मे पर पहुंचीं तो कुत्तों ने भौंकना शुरु कर दिया। हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने पूछा ये कौन सा चश्मा है। लोगों ने बताया “हवाब” चश्मा है। पस वो ठहर गईं और फ़रमाने लगीं कि मुझे वापस चले जाना चाहिए। तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) और ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने इनसे अर्ज़ की , ठहरिये अल्लाह आप पर रहम करे। आपको आगे जाना चाहिये , मुसलमान आपसे उम्मीद लगाए हुए हैं कि आपके ज़रिये अल्लाह तआला इनकी इस्लाह फ़रमाएंगे। हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया मुझे वापस ही जाना चाहिये। मैंने रसूले करीम (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को सुना कि एक रोज़ आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने इसके बारे में बताया (क्या हाल होगा जब तुमसे एक पर हवाब चश्मे के कुत्ते भौकेंगे)

(38927) क़ैस से रिवायत है कि हज़रत आयशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने वफ़ात के करीब फ़रमाया कि मुझे अज़वाज़ ए मुतहरात के साथ दफ़नाना। मैंने आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّم) के बाद एक तरीक़ा इख़्तियार किया (क़िताल के लिए ख़रुज किया)

(38928) सअद बिन इब्राहीम अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) को ख़बर मिली कि हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) कहते हैं कि मैंने बैअत इस हालत में की के मेरी गुद्दी पर तलवार थी। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) को भेजा कि वो लोगों से इसकी ख़बर की तसदीक़ करें पस उसामा बिन ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया कि तलवार के बारे में मैं नहीं जानता लेकिन उन्होंने बैअत नापसन्दीदगी से की है लोग उनकी तरफ़ ऐसे झपटे क़रीब था कि इनको क़त्ल कर दें। रावी कहते हैं हज़रत सुहैब निकले इस हाल में कि मैं इनके एक जानिब में था। पस उन्होंने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया मेरा ख़याल है कि उम्मेऔफ़ सख़्त बर्हम है।

(38929) अबू जाफ़र से रिवायत है कि जंगे जमल के दिन हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) और इनके साथी हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) और हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) पर रो रहे थे।

(38930) अबू नज़रह से रिवायत है कि क़बीला रबीआ वाले बनू मुसलमा की मस्जिद में हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) से हम कलाम हुए और कहने लगे कि तुम तो दुश्मन के गले पर क़ाबिज़ थे कि हमको ये इतलाअ पहुंची कि आपने इस शख़्स {हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ)} की बैअत कर ली है फिर अब आप इसी से क़िताल कर रहे हैं और कुछ इस तरह की बातें कीं। हज़रत तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया कि मुझे खजूर के बाग़ में दाख़िल किया गया और तलवार मेरी गरदन पर रख दी गई फिर कहा गया कि तुम बैअत कर दो वरना हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे मैंने बैअत कर ली और जान लिया के ये गुमराही की बैअत है। तैमयी कहते हैं कि वलीद बिन अब्दुल मलिक ने फ़रमाया कि अहले इराक़ के मुनाफ़िक़ीन से एक मुनाफ़िक़ जबला बिन हकीम ने हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) से कहा कि आप तो बैअत कर चुके हैं (फिर ये मुख़ालफ़त कैसी) हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) ने फ़रमाया कि तलवार मेरी गर्दन पर थी फिर मुझसे कहा गया कि बैअत करो वरना हम तुम को क़त्ल कर देंगे पस मैंने बैअत करली।

(38931) उम्मेराशिद(رحمه الله) से रिवायत है फ़रमाती हैं कि मैं उम्मेहानी (رضي الله عنه) के पास थी । हज़रत अली (رضي الله عنه) उन के पास तशरीफ़ लाए पस उम्मेहानी(رحمه الله) ने इनकी खाने पर दावत की । हज़रत अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि क्या बात है मुझे तुम्हारे हां बरकत (बकरी) नज़र नहीं आ रही। उम्मेहानी (رضي الله عنه) ने कहा सुब्हानल्लाह क्यों नहीं! अल्लाह की क़सम हमारे हां बरकत है, हज़रत अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया मेरी मुराद बकरी है। मैं उतरी तो सीढ़ी में दो आदमियों से मुलाक़ात हुई मैंने इन दोनों में से एक को सुना कि वो दूसरे से कह रहा था हमारे हाथों ने बैअत की है हमारे दिलों ने नहीं। उम्मेराशिद ने कहा ये कौन हैं। पस लोगों ने जवाब दिया तलहा और ज़ुबैर (رضي الله عنه)। मैंने सुना इनमें से एक दूसरे को कह रहा था हमारे हाथों ने बैअत की है हमारे दिलो ने नहीं। पस हज़रत अली (رضي الله عنه) ने ये आयत पढ़ी ।

فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّـهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا

(जो अहदशकनी करेगा उसका बोझ उसी पर होगा । जो अल्लाह से किया अहद पूरा करेगा , अल्लाह उसको अजरे अज़ीम देगा ।)

(38932) अब्द ख़ैर (رحمه الله) से रिवायत है जंग ए जमल के दौरान तीन दिन तक दोनों लश्करों के दर्मियान एक ख़ेमा गाढ़ा गया। हज़रत अली(رضي الله عنه), हज़रत तलहा (رضي الله عنه), हज़रत ज़ुबैर (رضي الله عنه) वहां तशरीफ़ लाते और उस बारे में बातें करते जो अल्लाह चाहता । हता कि जब तीसरा दिन हुआ तो दोपहर के बाद हज़रत अली (رضي الله عنه) ने ख़ेमा की एक जानिब उठाई और क़िताल का हुक्म दिया। फिर हमने एक दूसरे की जानिब चलना शुरू किया एक दूसरे की तरफ़ नेज़े चलाने शुरू किये यहां तक के अगर कोई शख़्स इन नेज़ों के ऊपर चलना चाहता तो चल सकता था । फिर हमने तलवारे उठाईं और इनको मैं तशबियह नहीं देता मगर वलीद के घर के साथ।

(38933) अब्द ख़ैर (رحمه الله) से रिवायत है कि हज़रत अली (رضي الله عنه) ने जंगे जमल के दिन फ़रमाया! तुम भागने वाले का पीछा मत करो और ना ज़ख़्मी को क़त्ल करो और जिसने हथियार डाल दिया वो अमन वाला है।

(38934) हजर बिन अन्बस (رحمه الله)से रिवायत है हज़रत अली (رضي الله عنه) ने अपने साथियों को बसरा में पांच पाँच सौ दिरहम दिए थे।

(38935) अबू बख़्तरी (رَحِمَهُ اللَّهُ) से रिवायत है कि जब अहले जमल {हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا) का लश्कर } शिकस्त खा चुका तो हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कोई आदमी लश्कर से बाहर किसी की तलाश ना करे (यानी शिकस्त खाने वालों का पीछा ना करे) जो सवारी या हथियार यहां से मिले हैं वो तुम्हारा है लेकिन तुम्हारे लिए कोई उम्मेवलद नहीं (यानी कोई बान्दी तुम्हारे लिए नहीं) और विरासतें अल्लाह तआला के मुक़र्रर कर्दा हिस्सों के मुताबिक़ तक़्सीम होंगी और जिस औरत का ख़ाविन्द फ़ौत हो जाए वो अपनी इद्दत चार महीने दस दिन (आज़ाद औरत की तरह) पूरी करे। हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से इनके लश्कर वाले कहने लगे । ऐ अमीरुल मोमिनीन आप इनका माल हमारे लिए हलाल करते हैं, इनकी औरतें हलाल नहीं करते। पस लश्कर वाले हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) पर ग़ालिब आ गए। आपने फ़रमाया अहले क़िब्ला के अख़्लाक़ ऐसे ही होते हैं ? फिर फ़रमाया लाओ अपने तीर मुझे दो और सबसे पहले क़ुरआ हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا) पर डालो । किसके हिस्से में आती हैं ? (जो तुमहारी सबकी मां हैं) क्योंके वो लश्कर की क़ाइद थीं। पस ये सुनकर वो मुन्तशिर हो गए और अल्लाह से मग़्फ़िरत करने लगे। पस हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) इन पर ग़ालिब आ गए हुज्जत और दलील में (यानी मुसलमानों की औरतों को बान्दी नहीं बनाया जा सकता)

(38936) हकीम इब्ने जाबिर (رَحِمَهُ اللَّهُ) फ़रमाते हैं कि मैंने तलहा बिन उबैयदुल्लाह(رَحِمَهُ اللَّهُ) को फ़रमाते हुए सुना जंगे जमल के दिन हमने हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के बारे में दो रुख़ा रवय्या अपनाया , पस हम नहीं पाते बैअत के बग़ैर चाराह कार।

(38937) हज़रत शअबी (رَحِمَهُ اللَّهُ) से रिवायत है कि जंग ए जमल के दिन जंग में कोई सहाबी ए रसूल शरीक नहीं हुए । हज़रत अली(رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ),अम्मार(رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ), तलहा(رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) और ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के सिवा अगर कोई पांचवां सहाबी शरीक हुआ हो, तो मैं कज़ाब हूं।

(38938) अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद(رَحِمَهُ اللَّهُ) से रिवायत है कि अम्मार बिन यासिर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया हमारी मां (हज़रत आयशा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا) हमारे इस रास्ते पर चलें और बेशक हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) की दुनिया आख़िरत में ज़ौजा मुहतरमा हैं लेकिन अल्लाह तआला ने हमें इसके ज़रिये आज़माया , ताकि अल्लाह तआला जान ले हम उसकी इताअत करते हैं या हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا) की।

(38939) उमैयर बिन सअद (رَحِمَهُ اللّٰهُ)से रिवायत है कि जब हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) जंगे जमल से वापस लौटे तो सिफ्फ़ीन की तैयारी शुरू फ़रमायी नख़आ क़बीला वाले जमा हुए और अश्तर के पास आए। उसने कहा घर में नख़आ के इलावह भी कोई है? इन्होंने जवाब दिया नहीं। फिर कहने लगा इस उम्मत ने अपने बेहतरीन इंसान का क़सद किया और इसको क़त्ल कर डाला। हम अहले बसरा की तरफ़ गए वो ऐसी क़ौम थी जिसने हमारी बैअत की हुई थी पस इनके बैअत तोड़ने की वजह से हमारी मदद की गई और कल तुम ऐसी क़ौम की तरफ़ जाने वाले हो जो शाम के रहने वाले हैं और इन्होंने हमारी बैअत नहीं की। पस मैं तुम मे से हर आदमी देख ले कि वो अपनी तलवार कहां रखेगा।

(38940) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास(رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) से मर्वी है रसूलुल्लाह(صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया "तुम में से कौन नरम बालों वाले ऊंट वाली होगी, इसके गिर्द बहुत सारे मक़्तूलीन को क़त्ल किया जाएगा वो जंग करने के बाद निजात पा लेगी।

(38941) अबू बकरहा (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि उनसे किसी ने पूछा आपको जंगे जमल के दिन किस शैय ने मना किया क़िताल में शिरकत से अहले बसरा की तरफ़ से ? तो इन्होंने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) को फ़रमाते हुए सुना था कि एक हलाक होने वाली क़ौम निकलेगी, जो कामयाब ना होगी, इनकी सरदार एक औरत होगी । फिर फ़रमाया वो जन्नत में होंगे।

(38942) हज़रत अबू बकरहा (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि मैंने नबी ए करीम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) को फ़रमाते हुए सुना कि जो क़ौम अपना मामला किसी औरत के सुपर्द करे , वो कामयाब नहीं हो सकती।

(38943) हारिस बिन जम्हान जअफ़ी (رَحِمَهُ اللّٰهُ) से रिवायत है कि हमने जंग ए जमल के दिन देखा कि हमारे इनके नेज़े आपस में ऐसे घुसे हुए थे कि अगर आदमी इन पर चलना चाहता हो तो चल सकता था । हम भी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ की सदाऐं बलंद कर रहे थे और ये भी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ की सदाऐं बुलंद कर रहे थे।

(38944) हज़रत ज़हाक (رَحِمَهُ اللّٰهُ) से मन्क़ूल है कि जब तलहा (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) और इनके साथी शिकस्त खा गए तो हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने अपने मुनादी को हुक्म दिया कि वो ऐलान करे कि अब सामने से आने वाले और पीट फेर कर जाने वाले को क़त्ल ना किया जाए और ना

ही कोई दरवाज़ा खोला जाए और ना किसी के लिए बान्दी बनाना हलाल है और ना ही माल हलाल है।

(38945) अब्द ख़ैर (رَحِمَهُ اللّٰهُ) से मंक़ूल है कि हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने जंगे जमल के दिन मुनादी को हुक्म दिया कि वो निदाअ लगाए "ख़बरदार कोई ज़ख़्मी को क़त्ल ना करे और ना ही पीठ फेर कर भागने वाले का पीछा करे"।

(38946) इब्ने हनीफ़ा (رَحِمَهُ اللّٰهُ) से रिवायत है कि जंग ए जमल के दिन मैं एक शख़्स पर ग़ालिब था जब मैं इसको नेज़ा मारने लगा तो इसने कहा मैं हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) के दीन पर हूं (यानी मैं इनके साथ हूं) मैं जान गया ये क्या चाहता है । मैंने इसे छोड़ दिया।

(38947) हज़रत अब्बास (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि मुझे हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने हज़रत तलहा और हज़रत ज़बैर (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) की तरफ़ जंगे जमल के दिन भेजा। मैंने उनसे कहा आप दोनों के भाई आपको सलाम कर रहे हैं और आप दोनों से पूछ रहे हैं क्या तुमने मुझे किसी हुकम में ज़ुलम करते हुए पाया या इस तरह कोई और बात है ? हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया "इनमें से कोई नहीं मगर ख़ौफ़ के साथ उनके अन्दर लालच भी है"।

(38948) मुहम्मद बिन हन्फ़िया (رَحِمَهُ اللّٰهُ) से रिवायत है कि हम एक गिरोह में बैठे हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) की कमी बयान कर रहे थे, जब हमने हद से तजाविज़ किया तो मैं हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास की तरफ़ मुतावज्जाह हुआ और उनसे कहा ऐ इब्ने अब्बास क्या आपको जंग ए जमल की शाम याद है । मैं हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) के दाऐं जानिब था और आप बाऐं जानिब, जब हमने मदीना की तरफ़ से एक चीख़ सुनी थी । इब्ने अब्बास ने फ़रमाया जी हां , जब फ़लां को इसकी ख़बर लाने के लिए भेजा था। पस उसने ख़बर दी थी कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ऊंटों के बाड़े में खड़े होकर हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) के क़ातिलों पर लाअनत कर रही थीं। फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया "लाअनत हो उस्मान (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) के क़ातिलों पर वो चाहे नरम ज़मीन में हों, या पहाड़ों में, ख़ुश्कि में हों, या तरी में" मैं हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) के दाएं जानिब था और ये बाएं जानिब थे । पस मैंने और इब्ने अब्बास ने आमने सामने ये सुना। अल्लाह की क़सम मैंने हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) का आज तक कोई ऐब बयान नहीं किया।

(38949) तमीम बिन ज़हल ज़बी से मन्क़ूल है कि मैं जंग ए जमल के दिन हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) की रकाब थामे हुआ था और इन्ही के साथ जंग में मसरूफ़ था। मैं देख रहा था कि

मैं जन्नत मे हूं और वो मक़्तूलीन को ग़ौर से देख रहे थे। वो एक आदमी के पास से गुज़रे जिसकी हालत बड़ी अजीब और मतक़ूल था। पस हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया इसे कौन जानता है ? मैंने कहा फ़लां शख़्स है, ज़ब्बी क़बीले से ताल्लुक़ रखता है और फ़लां का बेटा है हत्ता कि मैंने सात मक़्तूलीन को गिना जो इसके गिर्द ओंधे पड़े हुए थे। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया कि मैं पसन्द करता हूं कि ज़मीन मैं कोई ज़ब्बी ना होता मगर इस शेख़ के मातहत।

(38950) अब्दुल्लाह बिन हारिस से मन्क़ूल है कि मैं हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जब आप (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) जंगे जमल से फ़ारिग़ हो चुके थे। वो मेरा हाथ थाम कर अपने घर ले गए। वहां इनकी अहिलया और दो बेटियां रो रही थीं । बान्दी को दरवाज़े पर बिठाया हुआ था ताकि वो उन्हें किसी के आने की ख़बर दें। औरतों को रोते हुए देखकर वो ग़ाफ़िल हो गई। हत्ता के हज़रत (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) अन्दर दाख़िल हुए और मैं पीछे ठहर गया और दरवाज़े पर खड़ा हो गया, चुनांचे वो ख़ामोश हो गईं हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने इनसे कहा क्यों रो रही हो? फिर एक या दो दफ़ा डान्टा फिर इनमें से एक औरत ने कहा कि हम वही कह रहे हैं जो आप (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) और इनकी रिश्तेदारी (नबीएकरीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّم) हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) और इनकी रिश्तेदारी के बारे में हमसे सुना। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया मैं उम्मीद करता हूं कि हम उन लोगों की तरह होंगे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया "हम इनके दिलों से ख़फ़्गी दूर करेंगे वो भाई भाई होंगे आमने सामने तख़्तों पर बैठे होंगे। फिर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया कौन होंगे अगर हम ना होंगे ? वो कौन होंगे ? इस बात को इन्होंने कई बार दोहराया यहां तक के मेरे दिल में ख़्वाहिश पैदा हो गई कि ये ख़ामोंश हो जाएं।

(38951) हज़रत तलहा बिन मुसरफ (رَحِمَہُ اللّٰہُ) से रिवायत है कि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने जंगे जमल के दिन हज़रत तलहा (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) को बैठाया और इनके चहरे से मिट्टी साफ़ की फिर हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) की तरफ़ देख कर फ़रमाया । "काश मैं इनसे पहले मर जाता"।

(38952) हज़रत हुमैर बिन मालिक से रिवायत है कि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) से जंग ए जमल के दिन हज़रत अम्मार (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने अर्ज़ किया कि आप का क़ैदियों के बारे में क्या ख़याल है? हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया हमने सिर्फ़ इनसे क़िताल किया है जो हमसे

लड़ाई के लिए आए (यानी हम क़ौदियों को ग़ुलाम नहीं बनाएंगे) हज़रत अम्मार (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया अगर आप इसके ख़िलाफ़ कोई बात कहते तो हम आपकी मुख़ालिफ़त करते। (38953) हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस (رَحِمَہُ اللّٰہُ) से मन्क़ूल है कि हम मदीना पहुंचे हमारा हज करने का इरादह था। अपनी मंज़िल पर पहुचं कर हमने कजावे रखे कि अचानक आने वाले ने कहा कि लोग मस्जिद में परेशान हाल जमा हैं। पस मैं मस्जिद पहुंचा और लोगों को वहां जमा देखा। हज़रत अली, ज़ुबैर, तलहा और सअद बिन वक़ास (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) भी वहां मौजूद थे। मैं भी इस तरह खड़ा हो गया कि हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) भी तशरीफ़ लाए। किसी ने कहा ये उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) हैं , उन के सिर पर ज़र्द रंग का कपड़ा था जिस से उन्होंने अपना सिर ढंपा हुआ था , फरमाने लगे येह हजरत अली(رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) हैं? लोगों ने कहा जी हां। फिर फ़रमाया ये हज़रत ज़ुबैर हैं? लोगों ने कहा जी हां।फिर फ़रमाया ये तलहा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) हैं ? लोगों ने जवाब दिया जी हां। फिर फ़रमाया ये सअद हैं ? लोगों ने कहा जी हां। फिर फ़रमाने लगे मैं तुम्हें उस अल्लाह की क़सम देता हूं जिसके अलावा कोई माबूद नहीं। क्या तुमको मालूम है कि रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया था जो फ़लां क़बीले के बाड़े को ख़रीद लेगा अल्लाह तआला इसकी मग़्फ़िरत फ़रमाएंगे। पस मैंने इसे बीस या पचास हज़ार दिरहम के औज़ ख़रीदा और हाज़िर ख़िदमत होकर मैंने अर्ज़ किया था कि मैंने ख़रीद लिया है तो नबीऐ करीम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया कि तुम इसको मस्जिद बना दो और तुम्हारे लिए अज्र है ? तो लोगों ने कहा बिल्कुल इसी तरह है। फिर हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूं क्या तुम जानते हो ? कि रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया था जो बअर दोमह (कुन्वां) ख़रीद लेगा अल्लाह तआला इसकी मग़्फ़िरत फ़रमाएंगे। फिर मैंने इसे ख़रीदा और नबीए करीम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर अर्ज़ किया। मैंने कुंवां ख़रीद लिया है। तो नबीए करीम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया कि इसे मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दो इसका अजर अल्लाह तुमको देगा। लोगों ने कहा जी बिल्कुल ऐसे है। फिर हज़रत उस्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने लोगों से फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूं कि आप जानते हो रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया कुछ के चहरों की तरफ़ देखते हुए कि जो उन लोगों को सामाने जंग मुहिय्या करेगा (ग़ज़वाह-ए-तबूक में) अल्लाह तआला इसकी मग़्फ़िरत फ़रमाएंगे। पस मैंने इन लोगों को सामाने जंग दिया हत्ता के लगाम और

ऊंट बांधने की रस्सी तक मैंने मुहय्या की? लोगों ने कहा जी बिल्कुल ऐसे है। हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने तीन दफ़ा फ़रमाया ऐ अल्लाह तू गवाह रहना। हज़रत अहनफ़ कहते हैं कि मैं चला और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और इनसे अर्ज़ किया कि अब मुझे किस चीज़ का हुक्म देते हैं? और मेरे लिए (बैअत के लिए) किसको पसंद करते हो ? क्योंकि इनको {हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ)} शहीद होते देख रहा हूं। दोनों ने जवाब दिया हम आपको हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से बैअत करने का हुक्म देते हैं। मैंने फिर अर्ज़ किया आप हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के बारे में हुक्म दे रहे हैं और आप मेरे लिए इन पर राज़ी हैं दोनों ने जवाब दिया हां।

फिर मैं हज के लिए मक्का रवाना हुआ कि इस दौरान हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की शहादत की ख़बर पहुंची। मक्का में हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) भी क़याम फ़रमा थी। मैं इनसे मिला और इनसे अर्ज़ किया कि अब मैं किनसे बैअत करूं उन्होंने भी हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) का नाम लिया। मैंने अर्ज़ किया आप मुझे हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से बैअत का हुक्म दे रही हैं और आप इस पर राज़ी हैं इन्होंने इस्बात में जवाब दिया। मैंने वापसी पर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से बैअत की मदीना में। फिर मैं बसरा लौट आया। फिर मैंने मामले को मज़बूत होते हुए ही देखा। इसी अस्ना में एक आने वाला मेरे पास आया और कहना लगा हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) हज़रत तलहा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) और हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ख़रैबा मक़ाम पर क़याम फ़रमा हैं। मैंने पूछा वो क्यों आए हैं ? तो उसने जवाब दिया आपसे मदद चाहते हैं हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के ख़ून का बदला लेने में जो मज़लूम शहीद हुए हैं। अहनफ़ ने फ़रमाया मुझ पर इससे ज़्यादा परेशान करने वाला मामला कभी नहीं आया। मेरा इनसे तलहा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) , ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) जुदा होना बड़ा दुशवार कुन मरहला है जबकि इनके साथ उम्मुल मोमिनीन और रसूले करीम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّم) के सहाबा भी हैं। और दूसरी तरफ़ नबीए करीम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّم) के चचाज़ाद से क़िताल करना भी छोटी बात नहीं जबकि इनकी बैअत का हुक्म वो तलहा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ), ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ), उम्मुल मोमिनीन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ख़ुद दे चुके हैं। जब मैं इनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो वो कहने लगे कि हम हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के ख़ून का बदले के सिलसिले में मदद लेने के लिए आए हैं जो मज़लूम क़त्ल हुए हैं। अहनफ़ कहते हैं कि मैंने कहा ऐ उम्मुल मोमिनीन! मैं आपको अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं क्या मैंने आपसे कहा था कि आप मुझे किसकी बैअत का हुक्म देती हैं? आपने

फ़रमाया था अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) का मैंने फिर कहा था कि आप मुझे हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के बारे में हुक्म देती हैं और आप मेरे लिए इन पर ख़ुश हैं तो आपने फ़रमाया था हां। हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا) ने जवाब दिया बिल्कुल ऐसे ही है लेकिन अब अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) बदल चुके हैं। फिर यही बात मैंने तलहा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) और हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को मुख़ातब करके कही उन्होंने भी इसी तरह इक़रार किया और फ़रमाया अब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) बदल चुके हैं। मैंने कहा अल्लाह की क़सम मैं तुमसे क़िताल नहीं करूंगा जबकि तुम्हारे साथ उम्मुल मोमिनीन भी हैं और नबीऐ करीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) के सहाबा भी हैं। और हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से भी क़िताल नहीं करूंगा क्योंकि तुम लोगों ने ख़ुद ही मुझे अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) की बैअत का हुक्म दिया है। मेरे लिए तीन बातों में से किसी एक को इख़्तियार कर लो या तो मेरे लिए बाब-ए-जसर खोल दो ताकि मैं अज्मियों के वतन चला जाऊं हत्ता के अल्लाह तआला अपना फ़ैसला करदे या फिर मुझे मक्का जाने दिया जाए जब तक के अल्लाह तआला कोई फ़ैसला ना फरमा दें या फिर मैं अलैयहदा हो जाता हूं और क़रीब में क़याम करता हूं। उन्होंने कहा हम मश्वरह करते हैं फिर तुम्हे पैग़ाम भेजते हैं पस उन्होंने मश्वरह किया और कहने लगे के हम इसके लिए बाब जसर खोल देते हैं तो इसके साथ मुनाफ़िक़ और जुदा होने वाले मिल जाएंगे और फिर ये मक्का चला जाएगा और मुमकिन है तुम्हारे बारे में मक्का वालों की राए को बदले और तुम्हारी ख़बरें इनको बतलाएं लिहाज़ा ये मज़बूत राए नहीं है। इसको क़रीब ठहराओ ताकि मामले पर तुम ग़ालिब आ जाओ और इस पर निगाह भी रखो। पस वो मक़ाम जलआअ में ठहरे जो बसरा से दो फ़रसख़ पर है इसके साथ छह हज़ार का लशकर भी अलैयहदह हो गया।

फिर लश्कर की मुड भेड़ हुई पस पहले शहीद तलहा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) थे और कअब बिन सौर के पास कुरआने करीम भी था और दोनों लशकरों को नसीहत कर रहे थे इसी दौरान वो भी शहिद हो गए हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) बसरा के मक़ाम सफ़वान पहुंच गए जैसे तुमसे मक़ाम क़ादसिया है। पस इनसे बनू मजाशअ का एक शख़्स मिला और कहने लगा ऐ सहाबी रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) आप कहां जा रहे हैं। मेरी पनाह में आ जाएं आप तक कोई नहीं पहुंच सकता। पस वो इसके साथ चल दिए फिर अहनफ़ के पास एक आदमी आया और हज़रत ज़ुबैयर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के बारें में इत्लाअ दी तो वो कहने लगे इनको किसने अमन दिया है इन्होंने तो मुसलमानों को मदमुक़ाबिल ला खड़ा किया यहां तक के वो एक दूसरे के

दरबानों को तलवारों से मार रहे है। और अब ख़ुद भी अपने घर और अहल की तरफ़ लोट रहे हैं। ये बात उमैयर बिन जरमूज़ और ग़वातु ग़वाअ बिन तमीम (से) फ़ज़ाला बिन हाबिस और नफ़ीअ ने सुनी पस वो इनकी तलब में निकले और हज़रत ज़ुबैर से मिले जबकि इनके साथ वो शख़्स भी था जिसने इनको पनाह दी थी। पस इनके पास उमैयर बिन जरमूज़ आया इस हाल में के घोड़े पर था। इसने हज़रत ज़ुबैर (رضی اللہ عنہ) को तअना दिया हज़रत ज़ुबैयर ने इस पर हमला कर दिया इस हाल में के आप भी घोड़े पर थे जिसका नाम ज़ुलख़मार था। जब उमैयर बिन जरमूज़ ने गुमान किया कि हज़रत ज़ुबैर (رضی اللہ عنہ) इसे क़त्ल कर देंगे तो इसने अपने दो साथियों को आवाज़ दी। ऐ नफ़ीअ, ऐ फ़ज़ाला पस इन सबने हज़रत ज़ुबैयर (رضی اللہ عنہ) पर हमला किया और उन्हें शहीद कर दिया।

(38954) तारिक़ बिन शबाब से रिवायत है, कहते है कि जब हज़रत उस्मान (رضی اللہ عنہ) को क़त्ल किया गया । मैंने दिल में सोचा के मुझे किस शैए ने इराक़ ठहराया हुआ है हालांकि जमाअत तो मदीना में है मुहाजिरीन और अन्सार के पास । कहते हैं "मैं निकला मुझे ख़बर मिली कि लोगों ने हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) के हाथ पर बैअत कर ली है" कहते हैं कि मैं रबज़ह मक़ाम पर पहुंचा तो वहां हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) मौजूद थे। इनके लिए एक शख़्स ने बैठने के लिए नशस्त रखी। पस हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) खड़े होने की हालत में थे। उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना बयान की फिर फ़रमाया कि तलहा (رضی اللہ عنہ) और ज़ुबैर (رضی اللہ عنہ) ने बैअत ख़ुशी ख़ुशी की थी ना के हालत अकराह में। अब चाहते हैं कि वो मामले को बिगाड़ दें और मुसलमनों की लाठी (जमइयत) को तोड़ डालें, हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) ने इनसे क़िताल करने के लिए लोगों को उभारा। फिर हसन (رضی اللہ عنہ) बिन अली (رضی اللہ عنہ) खड़े हुए और फ़रमाया कि मैंने आपको नहीं कहा था कि अरब इनके साथ जमा हो जाएंगे अगर इस शख़्स {हज़रत उस्मान (رضی اللہ عنہ)} को शहीद किया गया। अगर आप अपने घर में रहते यानी मदीना में तो मुझे डर था कि आपको भी इसी लापरवाही से क़त्ल कर दिया जाता और आपका का कोई मददगार ना होता। हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) ने फ़रमाया तुम बैठ जाओ तुम ऐसे गुनगुनाते हो जैसे दोशीज़ा गुनगुनाती है या ये फ़रमाया कि तुम्हारे लिए ऐसा गुनगुना होना है जैसे दोशीज़ा के लिए गुनगुना होता है। अल्लाह की क़सम मैं मदीना इस भेड़िये की तरह बैठा था जो ज़मीन पर पत्थर गिरने की आवाज़ सुन रहा हो। पस मैंने इस मामले का बहुत गहराई से मुशाहिदा किया मैंने सिवाए तलवार या कुफ़्र के कुछ नहीं पाया।

(38955) सैयफ़ बिन फ़लां बिन मआविया अन्ज़ी अपने मामूं और वो मेरे नाना से नक़ल करते हैं कि जब जंग ए जमल का दिन आया तो लोग परेशान थे। लोग हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) की तरफ़ खड़े होते और मुख़्तलिफ़ चीज़ों का दावा करते। जब आवाज़ें ज़्यादा हो गईं और मैं जल्दी से एक टान्ग पर खड़ा हुआ और कहा कि अगर मैं अपनी बात समेट ना सका तो क़रीब में बैठ जाऊंगा पस मैंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरा कलाम पांच या छह लफ़्ज़ों का नहीं बल्कि सिर्फ़ दो अल्फ़ाज़ का है हमला या क़िसास। इन्होंने मेरी तरफ़ देखा और अपने हाथ से तीस तक गिना। कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) ने मेरी तरफ़ देखा और जो तुमने गिना (शुमार किया) वो मेरे इन क़दमों के नीचे है।

(38956) अबू नज़रह से मंक़ल है कि एक दफ़ा हज़रत अबू सईद के सामने हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ), हज़रत उस्मान (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ), हज़रत तलहा (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) और हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) का तज़्किरह किया गयी तो इन्होंने फ़रमाया वो ऐसी क़ौमें थीं जिनके हालात मुख़्तलिफ़ थे इनके मामले को अल्लाह की तरफ़ लौटा दो।

(38957) हबीब बिन अबू साबित (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) जंग जमल के दिन फ़रमा रहे थे! ऐ अल्लाह मैंने इसका इरादा नहीं किया था।

(38958) क़ैय्स से मंक़ूल है कि मरवान जंग जमल के दिन हज़रत तलहा (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) के साथ था। जब जंग छिड़ चुकी तो मरवान ने कहा मैं आज के बाद इन्तक़ाम तलब नहीं करूंगा फिर इनकी तरफ़ तीर फैंका जो हज़रत तलहा (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) के घुटने में लगा और ख़ून मुसलसल बहता रहा यहां तक के वो शहीद हो गए हज़रत तलहा (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) ने (शहादत से पहले) फ़रमाया इस ज़ख़म को छोड़ दो ये वो तीर है जिसे अल्लाह ने भेजा है।

(38959) हज़रत सवार (رَحِمَهُ ٱللَّٰهُ) से मंक़ूल है कि मूसा बिन तलहा (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) ने मुझे किसी ज़रूरत के लिए अपने पास बुलाया मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ। मैं इनके पास बैठा था कि इसी अस्ना में मस्जिद के कुछ लोग हज़रत मूसा बिन तलहा के पास आए और कहा ऐ अबू ईसा हमें हमारी रात के असारी के बारे में बताइए, हज़रत सवार (رَحِمَهُ ٱللَّٰهُ) सुबह के वक़्त क़त्ल कर दिए जाएंगे पस जब मैंने सुबह की नमाज़ अदा की तो एक शख़्स दोड़ता हुआ आया जो पुकारते हुए कह रहा था अला सारी अला सारी फिर एक दूसरा शख़्स इसके नक़्शे क़दम पर चलता हुआ आया वो पुकार रहा था मूसा बिन तलहा मूसा बिन तलहा हज़रत सवार (رَحِمَهُ ٱللَّٰهُ) फ़रमाते हैं कि पस मैं चला और अमीरुल मोमिनीन के पास आया और सलाम

किया। अमीरुल मोमिनीन ने कहा कि क्या तुमने बैअत कर ली ? जहां लोग दाख़िल हुए तुम दाख़िल हो गए हो ? मैंने कहा जी हां। सवार फ़रमाते हैं कि इस तरह (हाथ फैलाए हुए) अमीरुल मोमिनीन ने अपने हाथ फैलाए। फिर कहा तुमने बैअत कर ली फिर कहा तुम अपने अहल व अयाल की तरफ़ लौट जाओ जब लोगों ने मुझे निकलते हुए देखा तो वो दाख़िल होना शुरू हुए और बैअत करने लगे।

(38960) हज़रत सदी (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से मंक़ूल है के "तुम इस फ़ितने से डरो जो सिर्फ़ ज़ुल्म करने वाले पर नहीं आएगा (अल क़ुरआन) इसका मिस्दाक़ असहाब जमल हैं।

(38961) हज़रत औफ़ (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह तआला के क़ौल وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً (बचो उस फ़ितने से जो अपनी लपेट में विशेष रूप से केवल अत्याचारियों को ही नहीं लेगा सुरह ८ आयत २५) के बारे में किसी से नहीं सुना मगर हसन से फ़रमाते थे कि फ़लां फ़लां इसका मिस्दाक़ हैं।

(38962) हज़रत जअफ़र (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) के सामने अस्हाब जमल का ज़िक्र किया,यहां तक के कुफ़्र तक पहुंचा दिया । पस हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने उसको मना किया।

(38963) हरीस बिन मुखेशी (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से मन्कूल है कि मैंने उलेयस के दिन से ज़्यादा सख्त दिन नहीं देखा मगर जंग ए जमल का दिन (कि ये उस से भी सख्त था)

(38964) हज़रत अबू बकर बिन उम्रो बिन अत्बा (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से मंक़ूल है कि जंग ए सिफ्फ़ीन और जमल के दर्मियान दो या तीन महीने का फ़र्क़ था।

(38965) अबू जअफ़र से रिवायत है कि जंग ए जमल के दिन उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ से हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने एक आवाज़ सुनी। हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने लोगों से कहा "देखो ये क्या कह रहे हैं"। कुछ लोगों ने देख कर बताया कि हज़रत उस्मान (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) के क़ातिलीन को मलामत कर रहे हैं। फिर हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया "ऐ अल्लाह हज़रत उस्मान (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) के क़ातिलों को ज़लील कर दे"।

(38966) अली बिन उम्रो सक़फ़ी (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) से मन्कूल है कि हज़रत आयशा (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهَا) ने फ़रमाया कि मैं उस सफ़र से रुक जाती मुझे इससे ज़्यादा पसंद था कि रसूलुल्लाह (صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ) से मेरे लिए हारिस बिन हिशाम जैसे दस बेटे होते।

(38967) सुलैमान बिन सर्द से मन्क़ूल है, कहते हैं कि मैं जंग ए जमल के दिन हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ । उनके पास हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) और इनके बाज़ साथी भी थे । हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने जब मुझे देखा तो फ़रमाया ऐ इब्न सर्द कमज़ोर और ढीले पड़ गए और पीछे ठहर गए। अल्लाह के साथ तुम्हारा किया मामला होगा। अल्लाह तआला ने आपसे बेनियाज़ कर दिया । मैंने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन मामला बड़ा सख़्त हो गया। मामलात ऐसे हो गए हैं कि आपके दोस्त और दुश्मन में इम्तियाज़ मुश्किल हो चुका, कहते हैं कि जब हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) खड़े हुए तो मैंने इनसे अर्ज़ किया आपने मेरी ज़रा भी हिमायत नहीं की और ना ही मेरी तरफ़ से कोई उज़्र इस शख़्स (हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ)) के पास किया ? हालांकि मैं इस बात का मुतमन्नी था इनके पास मेरी गवाही है। हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया इन्होंने {हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ)} जो मलामत आप पर करनी थी सो वो की। हालांके मुझे जंग ए जमल के दिन फ़रमाया कि लोग एक दूसरे की तरफ़ जा रहे हैं । ऐ हसन तेरी मां तुझे गुम करे ! तेरा मेरे इस मामले के बारे में क्या ख़याल है। दोनों लशकर आमने सामने हैं अल्लाह की क़सम मैं इसके बाद ख़ैर नहीं देखता। मैंने कहा आप ख़ामोश हो जाइए आप के साथी ना सुन लें । पस कहने लगें कि तूने मामला मशकूक कर दिया और तुझे क़त्ल कर दें।

(38968) हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से मंक़ूल है कि एक आदमी ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के पास आया और अर्ज़ किया कि मैं आपके लिए हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को क़त्ल कर दूं। हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया वो कैसे ? इसने जवाब दिया मैं उनके पास जाकर कहूंगा कि मैं आपके साथ हूं । फिर मैं इन्हें धोखे से क़त्ल कर डालूंगा। हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّم) को फ़रमाते हुए सुना है कि ईमान धोखे को रोकने वाला है और मोमिन कभी धोखा नहीं देता।

(38969) अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से रिवायत है कि जंग ए जमल के दिन हज़रत ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) खड़े थे इन्होंने मुझे बुलाया मैं इनके पहलू मे खड़ा हो गया। फिर फ़रमाने लगे कि ज़ालिम होकर या मज़लूम होकर क़त्ल कर दिया जाऊंगा। मैं देख रहा हूं कि मैं आज मज़लूम क़त्ल कर दिया जाऊंगा मुझे सबसे ज़्यादा फ़िक्र अपने क़र्ज़ की है। क्या तू मेरे क़र्ज़ से कोई माल ज़ाइद देखता है? फिर फ़रमाया ऐ मेरे बेटे मेरे माल व जायदाद को बेच कर मेरा दीन अदा कर देना। मैं तुम्हारे लिए एक तिहाई की वसीयत करता हूं और दो

तिहाई अपने बेटों के लिए है। क़र्ज़ा अदा करने के बाद अगर कोई माल बचे तो एक तिहाई तेरे बेटे के लिए है।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने मुझे दीन के बारे में वसीयत करते हुए फ़रमाया कि मेरे बेटे अगर तू कहीं आजिज़ आ जाए तो मेरे मौला से मदद तलब कर लेना, अब्दुल्लाह इब्न ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम मैं ना समझा के मौला से क्या मुराद है । यहां तक कि मैंने अर्ज़ किया आपके मौला कौन हैं ? तो इन्होंने फ़रमाया "अल्लाह" वो कहते हैं कि अल्लाह की क़सम जब भी मुझे क़र्ज़ अदा करने में मुश्किल आई तो मैंने दुआ की ऐ ज़ुबैर के मौला इसका क़र्ज़ अदा फरमा दे पस अल्लाह तआला ने क़र्ज़ अदा करने की मदद की, कहते हैं कि हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) शहीद हुए तो इनके विरसे में कोई दिरहम व दीनार नहीं था सिवाए ज़मीनों के। इन ज़मीनों में से कुछ बाग़ात थे, गयारह घर मदीने में थे, दो घर बसरा में, एक घर कूफ़ा में और एक घर मिस्र में। ये क़र्ज़ इन पर ऐसे हुआ था कि जब कोई शख़्स इनके पास अमानत रखने के लिए आता तो हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) फ़रमाते ये अमानत नहीं बल्कि आपका मेरे पास क़र्ज़ है, क्योंकि मैं डरता हूं इसके ज़ाऐ होने से। वो कभी किसी शहर के वाली नहीं बने, ना टेकस और खराज के वाली बने और ना किसी और शैए के वाली बने सिवाए इसके के वो रसूले करीम (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) और हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के साथ ग़ज़वात में रहे।

(38970) हज़रत असवद (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि ज़ुबैर बिन अवाम जब बसरा तशरीफ़ लाए । बैतुल माल में दाख़िल हुए , वहां सोने चांदी के ढेर थे । फिर फ़रमाया "वअदा किया तुमसे अल्लाह ने बहुत ग़नीमतों का कि तुम इनको लोगे, सो जल्दी पहुंचा दी तुमको ये ग़नीमत" (अल फ़तह 21) और एक फ़तह और जो तुम्हारे बस में नहीं थी वो अल्लाह के क़ाबू में है। फिर फ़रमाया कि ये हमारे लिए है।

(38971) हज़रत जअफ़र (رَحِمَهُ اللَّهُ) अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि बसरा (की लड़ाई) के दिन हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने मुनादियों को ये निदा लगाने का हुक्म दिया कि कोई भागने वाले का पीछा ना करे, कोई ज़ख़्मी को क़त्ल ना करे। कोई क़ैदी को क़त्ल ना करे, जो अपने दरवाज़े बन्द कर ले उसे अमन है, जो अपना हथियार डाल दे उसे भी अमन हासिल है और इनके सामान से कोई शैए ना ली जाए।

(38972) हज़रत अबुल आला (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से मन्क़ूल है, कहते हैं कि जंग ए जमल के दिन जब ज़ैद बिन सौहान को मुसीबत पहुंची । तो कहने लगे यह वही बात है जिसकी मेरे दोस्त सलमान फ़ारसी (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने मुझे ख़बर दी थी कि ये उम्मत अपने अहद व पैमां को तोड़ने से हलाक होगी।

(38973) अब्दुल्लाह बिन उबैय्द बिन उमैयर (رَحِمَهُ اللَّهُ) से मन्क़ूल है कि हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया मैं पसंद करती हूं कि मैं एक तर शाख़ होती और अपना ये सफ़र तय ना करती (जंग ए जमल के लिये सफ़र)

(38974) उबैय्द बिन सअद से रिवायत है कि हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से (जंग ए जमल के) उनके सफ़र के बारे में सवाल किया गया तो इन्होंने फ़रमाया ये तक़्दीर का फ़ैसला था।

(38975) हज़रत इब्न हनफ़िया फ़रमाते हैं कि जंग ए जमल में हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने हर तरह का माल ग़नीमत में तक़सीम फ़रमाया।

(38976) हज़रत रबइ बिन हराश से मन्क़ूल है कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया मैं उम्मीद करता हूं कि मैं, तलहा और ज़ुबैर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) इन लोगों में से होंगे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया । وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ (उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे हम दूर कर देंगे; उनके नीचें नहरें बह रही होंगी)

(38977) अब्दुल्लाह बिन सलमा से मंक़ूल है, हालाकि वो जंग ए जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के साथ शरीक हुए थे, कहते हैं कि मुझे जंग ए जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन की वजह से ज़मीन पर जो कुछ है, ख़ुश नहीं कर सकता।

(38978) मुजाहिद से मंक़ूल है मुहम्मद बिन अबीबकर या मुहम्मद बिन तल्हा मे से किसी एक ने हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से अर्ज़ किया ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप मुझे क्या हुक्म देती हैं तो हज़रत आयशा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया अगर तू ताक़त रखता है तो आदम अलैय्हिस्सलाम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) में से बेहतर (हाबील) की तरह हो जा (यानी तलवार ना उठा)

(38979) अबू सालेह से मंक़ूल है कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने जंगे जमल के दिन फ़रमाया 'मैं पसंद करता हूं कि मैं इस वाकिया से बीस साल पहले मर चुका होता'।

(38980) यज़ीद बिन ज़ुबेयाआ अब्सी (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) से नक़ल करते हैं कि इन्होंने जंग ए जमल के दिन फ़रमाया कोई भागने वाले का पीछा ना करे और ना ही ज़ख़मी को क़त्ल करे।

(38981) अबू नज़रह (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) बनू ज़बैयआ के एक आदमी से नक़ल करते हैं कि जब तलहा और ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) बनू ताहिया में तशरीफ़ फरमा हुए तो मैं अपने घोड़े पर सवार हुआ इनके पास आया और इनके पास मस्जिद में दाख़िल हुआ। मैंने इनसे कहा आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैय्हि वसल्लम के असहाब हैं! क्या ये कोई राए है जिसे आप देख रहे हैं पस हज़रत तलहा (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने तो सिर झुका लिया और कोई बात नहीं की और ज़ुबैर ने कलाम किया और फ़रमाया कि हमें इत्लाअ दी गई है कि यहां काफ़ी सारे दिराहिम हैं हम इन्हें लेने के लिए आए हैं।

(38982) अब्दुस्सलाम से मंक़ूल है कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) जंगे जमल के दिन हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) से अलैय्हदगी में मिले और फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूं। बताओ आप ने रसूलुल्लाह (صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ) को फ़रमाते हुए नहीं सुना जबकि तुम फ़लां क़बीले के छप्पर के नीचे मेरे हाथ पर झुके खड़े थे। तुम इससे क़िताल करोगे और तुम इस पर ज़ुलम करने वाले होगे फिर तुम पर तुम्हारे ख़िलाफ़ मदद की जाएगी। हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया 'मैंने सुना है यक़ीनन और अब मैं आपसे क़िताल नहीं करूंगा'।

(38983) असवद बिन क़ैयस (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) कहते हैं कि मुझे हज़रत ज़ुबैर (رَحِمَهُ ٱللَّهُ) को देखने वाले ने बताया कि हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने घोड़े को ज़ोर से नेज़ा मारा हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने इनको पुकारा, ऐ अल्लाह के बंदे ऐ अल्लाह के बंदे। पस हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) तशरीफ़ लाए यहां तक के दोनों हज़रात के जानवरों के कान एक दूसरे के क़रीब हो गए। हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने इनसे फ़रमाया पस आप को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं आप को वो दिन याद है जब नबीए करीम (صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ) तशरीफ़ लाए और मैं आपसे सरगोशी कर रहा था तो नबीऐ करीम (صَلَّى ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ آلِهِ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया तुम इससे सरगोशी कर रहे हो। अल्लाह की क़सम ये एक दिन तुम्हारे साथ क़िताल करेगा और ये तुम पर ये ज़ुल्म करने वाला होगा। पस हज़रत ज़ुबैर (رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ) ने अपने घोड़े को हांका और वापस चले गए।

(38984) अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद से मंक़ूल है कि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) अहले बसरा के शौहदा के पास से गुज़रे और दुआ की! ऐ अल्लाह इनकी मग़्फ़िरत फ़रमा, इनके साथ मुहम्मद बिन अबूबकर और अम्मार बिन यासिर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) भी थे । पस एक दूसरे से कहा कि हम हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को क्या कहते हुए सुन रहे हैं ? दूसरे ने फ़रमाया ख़ामोश हो जाओ कहीं तुम्हारी वजह से और इज़ाफ़ा कर दें।

(38985) अहनफ़ बिन क़ैय्स फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) अहले बसरा के पास आए तो हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि आप मदीने अपने घर लौट जाओ तो हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने इंकार किया हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फिर अपने पैग़ामे रिसां को भेजा कि अल्लाह की

क़सम तुम लौट जाओ वरना मैं तुम्हारी तरफ़ बकर बिन वाइल की ऐसी औरतों को भेजूंगा जिसके पास जिसके धार वाली छुरयां हैं । वो आप पर इनसे हमला करेंगी। जब हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने ये देखा तो वो चली गईं।

(38986) इब्ने अब्ज़ी (رَحِمَہُاللّٰہُ) से मंक़ूल है कि अब्दुल्लाह बिन बदैल हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के पास पहुंचे वो होदज में थीं जंगे जमल के दिन फिर अर्ज़ किया ऐ उम्मुल मोमिनीन आपको अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं क्या आप जानती हो कि मैं आपके पास उस दिन हाज़िर हुआ था जिस दिन हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को शहीद किया गया था। मैंने आपसे अर्ज़ किया था कि हज़रत उस्मान (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) शहीद हो गए अब आप मुझे क्या हुक्म देती हैं तो आपने फ़रमाया था कि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को लाज़िम पकड़ो। अल्लाह की क़सम वो बदले नहीं पस हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ख़ामोश हो गईं फिर यही बात अब्दुल्लाह बिन बदैय्ल ने तीन दफ़ा दोहराई पस वो ख़ामोश रहीं। अब्दुल्लाह बिन बदैय्ल ने ऊंटनी की कोंचें काटने का हुक्म दिया तो ऊंटनी की कांचें काट दी गईं पस मैं हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के भाई मुहम्मद बिन अबूबकर उतरे और इनके होदज को उठा कर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के सामने रख दिया। फिर इनको हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के हुक्म से अब्दुल्लाह बिन बदैय्ल के घर में दाख़िल कर दिया। जअफ़र बिन अबू मुग़ैयरह कहते हैं कि मेरी फूफी अब्दुल्लाह बिन बदैयल के हां थीं। वो बयान करती हैं कि आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने इनसे फ़रमाया मुझे अंदर दाख़िल कर दो पस मैंने उन्हें अंदर दाख़िल कर दिया और मैंने इनको एक सफ़लची (हाथ धोने का बर्तन) और जग इनके पास रख दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया। कहती हैं कि मैं

दरवाज़े की दरारो में से देख रही थी कि वो अपने सिर का इलाज कर रही थीं मैं नहीं जानती कि इनके सिर में कोई ज़ख़्म था या तीर का ज़ख़्म।

(38987) उम्र व बिन मरह से मंक़ूल है, कहते हैं सुलैमान बिन सर्द (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) हजरत अली की ख़िदमत में जंगे जमल के दिन जंगे से फ़राग़त के बाद आए ये सहाबी थे हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने इनसे कहा कि आपने हमें रुस्वा किया और आप हमसे पीछे रह गए। हज़रत सुलैमान बिन सर्द (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) हज़रत हसन से मिले और इन से कहा क्या आप अमीरुल मोमिनीन (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) से नहीं मिले ? इन्होंने मुझे इस तरह से कहा है। हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया आप इनकी इस बात से ख़ौफ़ज़दह मत हों कि वो जंग करने वाले हैं। मैंने जंगे जमल के दिन इनको देखा जब मैंने अपनी तलवार को अच्छी तरह थामा कि वो फरमा रहे थे कि मैं पसंद करता हूं कि इस दिन से बीस साल क़बल फ़ौत हो जाता।

(38988) ज़ैद बिन वहब से मंक़ूल है तलहा (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) और ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) बसरा तशरीफ़ लाए और सहल बिन हनीफ़ के सामने मामला पेश किया कि ये बात हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) को पहुंची हालांकि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने इनको इस बात पर आमादह किया था पस हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) तशरीफ़ लाए और ज़ीक़ुआर मक़ाम में क़याम फ़रमाया फिर अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) को कूफ़ा भेजा, कूफ़ा वालों ने पसोपेश से काम लिया फिर अम्मार (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) कूफ़ा वालों के पास आए फिर कूफ़ा वाले निकल पड़े, ज़ैद कहते हैं कि मैं भी इन्ही लोगों में शामिल था जो हज़रत अम्मार (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) साथ निकले थे पस हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने तलहा व ज़ुबैर (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) और इनके साथियों से हाथ रोके रखा और इनको हक़ की तरफ़ बुलाते रहे यहां तक कि उन्होंने ख़ुद ही लड़ाई की इब्तदा की पस इनके साथ नमाज़ ज़ुहर के बाद क़िताल किया सूरज ग़ुरूब नहीं हुआ था कि ऊंट के गिर्द ऊंट का दफ़ाअ करते हुए बहुत से लोग हलाक हो गए पस हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) ने फ़रमाया कि तुम ज़ख़्मी को क़त्ल ना करो और ना ही वापस भागने वाले को क़त्ल करो और जो अपना दरवाज़ा बंद करे और अपना हथियार फेंक दे इसको अमन है पस क़िताल हुआ मगर सिर्फ़ इसी शाम को , हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) के साथी अगली सुबह को आए और हज़रत अली से माले ग़नीमत में से माले ग़नीमत का मुताल्बा करने लगे तो हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) का क़ौल ये आयत थी कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं। وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّـهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ तुम में से कौन है हज़रत आयशा (رَضِیَاللّٰہُعَنۡہُ) को ले , तो इन्होंने कहा सुब्हानल्लाह वो तो हमारी मां है हज़रत अली

(رضي الله عنه) ने फ़रमाया क्या वो हराम है? लोगों ने कहा हां! फिर हज़रत अली (रضي الله عنه) ने फ़रमाया कि जो उन से {उम्मुल मोमिनीन (رضي الله عنه)} हराम है वो उनकी बेटियों से भी हराम है। फिर फ़रमाया कि क्या इनके मक़्तूल शौहरों की वजह से इनकी इद्दत चार माह दस दिन नहीं ? तो लोगों ने जवाब दिया क्यों नहीं। फिर फ़रमाया इन बेवाओं के लिए रिबअ और समन नहीं इनके शौहरों के अम्वाल से ? लोगों ने कहा क्यों नहीं। तो फिर यतीमों को क्यों हक़ नहीं कि वो इनके अम्वाल ना लें।

फिर फ़रमाया ऐ क़ंबर जो अपनी शैए पहचान ले वो अपनी शैए उठा ले। पस जो लश्कर के पास मदे मुक़ाबिल लोगों का सामान था, लौटा दिया गया। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने हज़रत तलहा (رضي الله عنه) और हज़रत ज़ुबैयर (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि तुमने बैअत नहीं की थी मेरे हाथ पर? तो इन्होंने कहा कि हम हज़रत उस्मान (رضي الله عنه) के ख़ून का बदला लेना चाहते हैं। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि हज़रत उस्मान (رضي الله عنه) का ख़ून मेरे सिर तो नहीं, उम्र व बिन क़ैय्स कहते हैं कि मुझे अबू क़ैय्स ,जो हज़रमोत से ताल्लुक़ रखते थे, ने कहा जब क़ंबर ने निदा लगाई कि अपनी चीज़ों को पहचान कर ले लो तो एक शख़्स हमारे पास से गुज़रा हम देगची में कुछ पका रहे थे। इसने इस देग्ची को उठा लिया हमने कहा इसे छोड़ दो यहां तक कि इसमें जो है पक जाए अबू क़ैय्स कहते हैं कि इसने देगची मैं टांग मारी और इसको पकड़ कर चलता हुआ।

(38989) अबू वाइल से मंक़ूल है कि अबू मूसा और अबू मसऊद, हज़रत अम्मार (رضي الله عنه) के पास आए जबकि वो लोगों को (हज़रत अली (رضي الله عنه) की मदद के लिए उभार रहे थे। पस इन दोनों ने हज़रत अम्मार (رضي الله عنه) से कहा कि जब से आप ईमान लाए हैं हमने आपके मामले में जल्दी करने से ज़्यादा ना पसंदीदा अमल नहीं देखा। हज़रत अम्मार (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि जब से तुम मुसलमान हुए हो मैंने तुम्हारे इस मामले में कोताही करने से ज़्यादा नापसंदीदा अमल नहीं देखा है. पस हज़रत अम्मार (رضي الله عنه) ने इनको एक एक जोड़ा पहनाया और फिर सब नमाज़ के लिए चले गए।

(38990) अबूज़ुहा से मंक़ूल है कि सलमान बिन सर्द ने हसन (رضي الله عنه) से अर्ज़ किया कि आप हज़रत अली (رضي الله عنه) के हां मेरा उज़र पेश करें। मैं इस इस वजह से जंग जमल में हाज़िर नहीं हो सका। हज़रत हसन (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि मैंने हज़रत अली (رضي الله عنه) को

देखा जब जंग ख़ूब भड़क उठी कि वो मेरी आड़ लिए हुए थे और फरमा रहे थे ऐ हसन! मैं पसंद करता हूं कि मैं इस वाक्ये से बीस साल पहले फ़ौत हो चुका होता।

(38991) इस्हाक़ बिन सुवेद से मंक़ूल है कि हम में से जंगे जमल के दिन पचास आदमी ऊंट के आस पास शहीद हुए वो सब क़ुरआन पढ़े हुए थे।

जंग-ए-सिफ्फ़ीन का बयान

(38992) हज़रत हबीब अबी साबित फ़रमाते हैं कि जंगे सिफ्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) का झंडा हाशिम बिन अत्बा के हाथ में था। इनकी एक आंख कानी थी। हज़रत अम्मार कहने लगे ऐ काने! आगे आओ, उस काने में कोई ख़ैर नहीं जो घबराहट का सामना ना करे। वो शरमाए और आगे आए। हज़रत उमरो बिन आस ने कहा कि मैं काले झन्डे वाले में एक अमल देख रहा हूं, अगर ऐसी ही रहा तो आज अरब कुछ करके रहेंगे। वो कह रहे थे कि हर पानी का घाट होता है और पानी के पास आया जाता है, अल्लाह के बंदों! सब्र करो, जन्नत तलवारों के साए के नीचे है।

(38993) मुस्लिम बिन अज्दअ लैय्सी कहते हैं कि हज़रत अम्मार (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) सफों के दर्मियान निकले और उस वक़्त झन्डे बुलंद थे, इन्होंने बलंद आवाज़ से ऐलान किया कि जन्नत की तरफ़ चलो, जन्नत की हूर तैयार है।

(38994) अम्मार बिन यासिर (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) जंगे सिफ्फ़ीन में फरमा रहे थे कि जो ये चाहता है कि उसे मोटी आंखों वाली हूर मिले । वो सवाब की नियत से दोनों सफ़ों के दर्मियान चले। मैं एक ऐसी सफ़ को देख रहा हूं जो तुम्हे ऐसी ज़रब लगाएगी , जिसके बारे में झूठे शक का शिकार हैं। इस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है । अगर वो हमें तहस नहस करके रख दें , फिर भी मुझे यक़ीन होगा कि मैं हक़ पर और वो बातिल पर हैं।

(38995) हज़रत अम्मार (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) फ़रमाते है कि अगर वो हमे तलवारों से मारे यहाँ तक हमे तहस नहस करके रख दें । फिर भी मुझे यक़ीन होगा कि मैं हक़ पर और वो बातिल पर हैं।

(38996) हज़रत रयाह बिन हारिस फ़रमाते हैं कि मैं जंगे सिफ्फ़ीन में हज़रत अम्मार बिन यासिर के साथ था, मेरे घुटने उनके घुटनों को छू रहे थे, एक आदमी ने कहा कि अहले

शाम ने कुफ़्र किया। हज़रत अम्मार ने फ़रमाया कि यूं ना कहो, उनके और हमारे नबी एक हैं, इनका और हमारा क़बीला एक है। वो फ़ितने में मुब्तला हैं, उन्होंने हक़ से अराज़ किया है। हम पर लाज़िम है कि इनसे क़िताल करें ताकि वो हक़ पर वापस आ जाएं।

(38997) हज़रत रयाह फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्मार ने फ़रमाया कि यूं ना कहो कि अहले शाम ने कुफ़्र किया बल्कि यूं कहो कि इन्होंने फ़िस्क किया और ज़ुल्म किया।

(38998) हज़रत रयाह फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्मार ने फ़रमाया के यूं ना कहो के अहले शाम ने कुफ़्र किया बल्कि यूं कहो के इन्होंने फ़िस्क किया और ज़ुल्म किया।

(38999) अबू वाइल कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह के एक क़रीबी साथी अबू मैय्सर उम्र व बिन शरजील ने ख़वाब देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ और मैंने देखा कि एक बहुत ख़ूबसूरत गुंबद वाला महल है। मैंने पूछा कि ये किसका है ? मुझे बताया गया कि ये ज़ुलकलाअ और होशब का है। ये दोनों जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत मआविया की मअयत में थे और शहीद हुए थे। मैंने कहा अम्मार और इनके साथी कहां हैं ? मुझे बताया गया कि वो आपके सामने हैं। मैंने कहा कि इन लोगों ने तो एक दूसरे को क़त्ल किया था फिर सब जन्नत में कैसे आ गए। मुझे बताया गया कि जब वो अल्लाह से मिले तो अल्लाह को इन्होंने वसीअ रहमत वाला पाया। मैंने कहा कि अहले नहर का क्या बना ? मुझे बताया गया कि इन्हें शिद्दत का सामना हुआ।

(39000) हज़रत हंज़ला बिन ख़वैय्लद अंज़ी कहते हैं कि मैं हज़रत मआविया के पास बैठा था कि इनके पास दो आदमी हज़रत अम्मार (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ) की शहादत का दावा करते हुए आए। एक कहता था कि इन्हें मैंने मारा और दूसरा कहता था कि इन्हें मैंने मारा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रो ने फ़रमाया कि तुम में से हर एक को दूसरे के लिए दस्तबर्दार होना पड़ेगा क्योंके मैंने रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَعَلٰۤی اٰلِہٖ وَسَلَّم) को फ़रमाते हुए सुना है कि अम्मार को एक बाग़ी जमाअत शहीद करेगी। ये सुन कर हज़रत मआविया ने फ़रमाया कि ऐ उम्रो! तुम्हारा हमारे बारे में क्या ख़याल है: उन्होंने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं लेकिन मैं क़िताल नहीं करूंगा। मेरे वालिद ने रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَعَلٰۤی اٰلِہٖ وَسَلَّم) से मेरी शिकायत की थी तो आपने मुझे फ़रमाया था कि अपने बाप की इताअत करो और जब तक ज़िंदा हो इनकी ना फरमानी ना करना। लिहाज़ा मैं तुम्हारे साथ हूं लेकिन क़िताल नहीं करूंगा।

(39001) हज़रत सअद बिन इब्राहीम फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) , हज़रत अदी बिन हातिम (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) का हाथ पकड़े मक़्तूलिन के दर्मियान से गुज़र रहे थे कि एक आदमी के पास से गुज़रे मैंने इसे पहचान लिया और कहा के ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं इस आदमी के बारे में गवाही देता हूं कि ये मोमिन है। उन्होंने फ़रमाया कि अब इसका क्या हुक्म है।

(39002) हज़रत अबू कअकाअ फ़रमाते है, कि मैंने हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को देखा कि वह हज़ूर कि मादा खच्चर शाहबाअ पर सवार होकर मक्तूलीन के दरमियान चक्कर लगा रहे थे.

(39003) हज़रत सल्हब फ़क़अ सी कहते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हमारे ख़ेमों के बाहर लाशें पड़ीं थीं और हम बदबू की वजह से खाना भी नहीं खा सकते थे। एक आदमी ने कहा जिस दिन अहले शाम ने कुफ़्र किया इस दिन ख़च्चर किसी ने मंगवाया था। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि वो कुफ़्र से भागे थे।

(39004) हज़रत हकीम बिन सअद फ़रमाते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हमारे और इनके नेज़े इस कसरत से चले कि अगर कोई शख़्स नेज़ों पर चलना चाहता तो चल सकता था।

(39005) हज़रत इब्न अबी ज़अब नक़ल करते हैं कि जब हज़रत अली की हज़रत मुआविया से लड़ाई हुई तो हज़र अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के साथियों ने पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने इनसे फ़रमाया कि उन्हें भी पानी लेने दो, पानी से नहीं रोका जा सकता।

(39006) हज़रत उम्मे सल्मा (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत अम्मार को एक बाग़ी जमाअत शहीद करेगी।

(39007) हज़रत सुलैय्मान बिन महरान कहते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) अपने होंठ को काटते हुए कह रहे थे कि अगर मुझे मालूम हो जाता कि मामला यहां तक पहुंच जाएगा तो मैं हरगिज़ नही निकलता। ऐ अबू मूसा जाओ और हमारे दर्मियान फ़ैसला करो ख़्वाह मेरा सिर ही क्यों ना देना पड़े।

(39008) हज़रत अबू सालेह फ़रमाते हैं कि हज़रत अली ने जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अबू मूसा से कहा कि जाओ और हमारे दर्मियान फ़ैसला को ख़्वाह मेरा सिर ही क्यों ना देना पड़े।

(39009) हज़रत हारिस फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) सिफ़्फ़ीन से वापस आए तो इन्हें अहसास हो गया था कि वो कभी ग़ालिब ना आएंगे, लिहाज़ा इन्होंने ऐसी बातें कीं , जो पहले कुछ कभी ना की थीं और फ़रमाया कि ऐ लोगों! तुम मुआविया की इमारत को

नापसंद ना करो, क्योंके अगर तुमने उन्हें खो दिया तो सिर गर्दनों से ऐसे गिरेंगे जैसे हंज़ल गिरता है।

(39010) हज़रत हज्र बिन अंबस कहते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से कहा गया कि हमारे और पानी के दर्मियान वो लोग हाइल हो गए हैं। हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि अशअस को बुलाओ, वो आए तो फ़रमाया कि मेरे पास इब्न सहर की ज़िरह लाओ। आप ने इस ज़िरह को पहन कर क़िताल किया और उन्हें पानी से दूर कर दिया।

(39011) हज़रत अली ने जंगे सिफ़्फ़ीन कि दोनों हकमों से कहा कि तुम किताब की रौशनी में फ़ैसला करो, अगर तुमने किताबुल्लाह की रौशनी में फ़ैसला ना किया तो तुम्हारा फ़ैसला क़बूल नहीं।

(39012) हज़रत जाफ़र फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने जंगे सिफ़्फ़ीन में फ़ैसला करने वालों से फ़रमाया कि किताबुल्लाह की रौशनी में फ़ैसला करो, जिसे क़ुरआन ने ज़िंदगी दी है उसे ज़िंदा करो और जिसे क़ुरआन ने मुर्दा किया है उसे मुर्दा कहो, और राहे रास्त से नही हटो।

(39013) हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन अपनी वालिदह से रिवायत करते हैं कि मुसलमानों ने जंगे सिफ़्फ़ीन में उबैय्दुल्लाह बिन उम्र को शहीद किया और इनके माल को बतौर माले ग़नीमत के हासिल किया।

(39014) हज़रत अबू जअफ़र फ़रमाते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली के पास जब कोई क़ैदी लाया जाता तो आप इसकी सवारी और अस्लाह ले लेते । और इससे अहद लेते कि वो वापस लशकर में नहीं जाएगा और इसको आज़ाद कर देते।

(39015) हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन फ़रमाते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन में मक़्तूलीन की तादाद सत्तर हज़ार पहुंच गई थी, लोगों ने इन्हें गिनने के लिए बांसों का सहारा लिया।

(39016) हज़रत यज़ीद बिन बिलाल कहते हैं कि मैं जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली की तरफ़ से शरीक था, जब इनके पास कोई क़ैदी लाया जाता तो वो फ़रमाते कि मैं तुम्हे हरगिज़ क़त्ल नहीं करूंगा, मुझे अल्लाह रब्बुलआलमीन का ख़ौफ़ मानअ है। आप इसका हथियार ले लेते और इससे क़सम लेते कि वो उनसे क़िताल नहीं करेगा और इसे चार दराहम अता करते।

(39017) हज़रत शक़ीक़ से पूछा गया कि क्या आप जंगे सिफ़्फ़ीन में शरीक थे ? इन्होंने फ़रमाया कि वो बदतरीन सिफ़्फ़ीन थीं।

(39018) हज़रत ज़हाक ने क़ुरआन मजीद की आयत

وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ فَإِن بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّـهِ

(यदि मोमिनों में से दो गिरोह आपस में लड़ पड़े तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती कर रहा हो उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए।)

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि इसे तलवार से दुरुसत करो। शागिर्द ने पूछा कि इनके मक़्तूलीन का क्या हुक्म है? फ़रमाया कि वो जन्नत के रिज़्क़ याफ़्ता शौहदा हैं। इनसे पूछा गया कि बग़ावत करने वालों का क्या हुक्म है ? फ़रमाया वो जहन्नमी हैं।

(39019) हज़रत अता बिन साइब फ़रमाते हैं कि मुझसे कई लोगों ने बयान किया कि एक मर्तबा शाम का एक क़ाज़ी हज़रत उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के पास आया । और उसने कहा कि ऐ अमीरुलमोमिनीन मैंने एक ख़्वाब देखा जिसने मुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया है। मैंने देखा कि सूरज और चांद बाहम क़िताल कर रहे हैं । और सितारे आधे आधे दोनों के साथ हैं। हज़रत उमर ने इससे पूछा कि तुम किसके साथ थे ? मैंने कहा कि मैं चांद के साथ था और सूरज के ख़िलाफ़ लड़ रहा था। हज़रत उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने क़ुरआन मजीद की ये आयत पढ़ी

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً { और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ क़रार दिया फिर हमने रात की निशानी (चाँद) को धुँधला बनाया और दिन की निशानी (सूरज) को रौशन बनाया }

फिर हज़रत उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि चले जाओ, मैं आइंदा तुम्हे कोई काम नहीं दूंगा। हज़रत अता फ़रमाते हैं कि मुझे मालूम हुआ कि वो जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत मुआविया की मअयत में मारा गया था।

(39020) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरवाह फ़रमाते हैं कि मुझे सिफ़्फ़ीन में शरीक होने वाले एक आदमी ने बताया कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) एक रात को निकले, इन्होंने अहले शाम को देखा और दुआ की कि ऐ अल्लाह! इनकी भी मग़्फ़िरत फ़रमा और मेरी भी मग़्फ़िरत फ़रमा।

(39021) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा फ़रमाते हैं कि मैंने जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अम्मार (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को देखा कि वो इन्तहाई बूढ़े थे, इनका हाथ कांप रहा था और इनके हाथ में नेज़ा

था। वो कह रहे थे कि दुश्मन अगर हमें मार कर तहस नहस भी कर दें तो भी मुझे यक़ीन होगा कि हमारे मुस्लिहीन हक़ पर और वो लोग बातिल पर हैं।

(39022) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरो फ़रमाते हैं कि जब सिफ़्फ़ीन में लोगों ने हमले के लिए हाथ बुलंद किए तो हज़रत उमरो बिन आस ने ये अशआर कहे: (तर्जुमा) लड़ाई ने ज़ोर पकड़ लिया, मैंने इस लड़ाई के लिए एक बहादुर और आला नसल का घोड़ा तैयार किया है। वो सख़्ती का मुक़ाबला सख़्ती से करता है और जब घुड़ सवार एक दूसरे के क़रीब आ जाएं तो वो और तवाना हो जाता है, वो तेज़ रफ़्तार है और बड़ा है, जब पानी से तर हो जाए तो और चुस्त हो जाता है। इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरो ने शेर कहे: (तर्जुमा) अगर जवान सिफ़्फ़ीन में मेरे खड़े होने को देख लें तो इनके बाल सफ़ेद हो जाएं। ये वो रात थी जब अह्ले इराक़ बादलों की तरह आए थे। इस वक़्त हमारी सिफ़्फ़ीन समुन्दर की मोजों की तरङ ठाठें मार रही थीं। इनकी चक्की भी घूमी और हमारी चक्की भी घूमी और हमारे कन्धे एक दूसरे के साथ मिल गए। जब मैं कहता के वो भाग गए तो इनकी एक जमाअत अचानक आकर हमला कर देती। वो हमसे कहते थे कि हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) के हाथ पर बैअत करो और हम कहते थे कि तुम लड़ाई करो।

(39023) हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि हज़रत जुन्दुब जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) के साथ थे लेकिन उन्होंने लड़ाई नहीं की।

(39024) हज़रत मंसूर कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्राहीम से पुछा कि क्या हज़रत अलक़मा जंगे सिफ़्फ़ीन में शरीक हुए थे। उन्होंने फ़रमाया हां और उनकी तलवारर भी रंगीन हुई थी और इनके भाई अबी क़ैय्स मारे गए थे।

(39025) हज़रत अबू बख़्तरी फ़रमाते हैं कि हज़रत अलक़मा जंगे सिफ़्फ़ीन से वापस आ तो इनकी तलवार रंगीन थी और वो हज़रत अली (رَضِيَ ٱللَّٰهُ عَنْهُ) की तरफ़ थे।

(39026) हज़रत सहल बिन हनीफ़ ने जंग सिफ़्फ़ीन में लोगों से कहा कि लोगो! अपनी राए को यक़ीनी ना समझना, रसूलुल्लाह ﷺ की मअयत में हमेशा हमारे लिए मामलात की हक़ीक़त को समझना आसान रहा लेकिन इस मामले में हम कोई कतई फ़ैसला नहीं कर सकते।

(39027) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा फ़रमाते हैं कि मैंने जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अम्मार को देखा कि वो इन्तहाई बूढ़े थे, इनका हाथ कांप रहा था और इनके हाथ में नेज़ा था। वो

कह रहे ते के दुशमन अगर हमें मार कर तहस नहस भी कर दें तो भी मुझे यक़ीन होगा के हमारे मुस्लिहीन हक़ पर और वो लोग बातिल पर हैं।

(39028)

(1) हज़रत कुलीब जर्मी फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद से बाहर था कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को देखा, वो हकमों के मामले में हज़रत मुआविया के पास से वापस आ रहे थे। वो हज़रत सुलैय्मान बिन रबीआ के घर में दाख़िल हुए और मैं भी इनके साथ दाख़िल हुआ। उन्हें एक आदमी ने ताअना दिया, फिर एक और आदमी ने ताअना दिया, फिर एक और आदमी ने ताअना दिया और कहा के ऐ इब्ने अब्बास! तुमने कुफ़्र किया, तुमने शिर्क किया और तुमने अल्लाह का हमसर ठहराया। अल्लाह तआला अपनी किताब में ये फरमाता है, ये फरमाता है और ये फरमाता है। रावी से पूछा गया कि वो कौन थे? उन्होंने बताया कि वो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) के जलीलुल क़द्र सहाबा थे।

(2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इनकी बात सुन कर फ़रमाया कि तुम अपने में से सबसे ज़्यादा आलिम और सबसे बड़े मुनाज़िर का इन्तख़ाब कर लो, वो मुझसे बात करे। उन्होंने एक काने शख़्स का इन्तख़ाब किया जनका नाम अताब था , और वो बनू तग़लब से थे। उन्होंने खड़े होकर कहा कि अल्लाह तआला फरमाता है, अल्लाह तआला फरमाता है। गौया वो अपनी ज़रूरत को कुरआन की एक सूरत से साबित कर रहे थे।

(3) इनकी बात सुनकर हज़रत इब्न अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि मैं आपको कुरआन का आलिम समझता हूं, क्योंके आपने बहुत वज़ाहत से अपना मौक़िफ़ पैश किया है। मैं आपको इस ज़ात की क़सम देकर पूछता हूं जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं। क्या आप जानते हैं कि शाम वालों ने फ़ैसले का मुतालबा किया और हमने इसे नापसंद किया और इंकार किया। फिर जब तुम्हे ज़ख़्म पहुंचे, अलम पहुंचे और तुम्हें फ़रात के पानी से महरूम किया गया तो तुमने फ़ैसले का मुताल्बा करना शुरु कर दिया ? मुझे हज़रत मुआविया ने बताया है कि इनके पास एक पतली कमर वाला घोड़ा लाया गया ताकि वो इस पर सवार होकर भाग जाएं यहां तक के तुम में से कोई आने वाले आए। उन्होंने कहा कि मैंने अहले इराक़ को इन लोगों की तरह छोड़ दिया है जो मक्का में नफ़र की रात इधर उधर भाग रहे थे।

(4) फिर हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि मैं तुम्हे इस ज़ात की क़सम देकर पूछता हूं जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं कि अबू बकर कैसे आदमी थे ? सबने कहा कि भले आदमी

थे और इनकी तारीफ़ की। फिर पूछा कि उमर बिन ख़त्ताब कैसे आदमी थे ? सबने कहा कि भले आदमी थे और इनकी तारीफ़ की। फिर इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि तुम्हारे ख़्याल में अगर कोई शख़्स हज या उमरे के लिए जाए और किसी हिरन या वहां के हशरात में से किसी को मार डाले और ख़ुद फ़ैसला कर ले तो क्या इसका फ़ैसला काबिले ऐतबार होगा जबकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ जबकि तुम्हारा जिस मामले में इख़्तिलाफ़ है वो इससे बहुत बड़ा है। जब अल्लाह तआला ने अदल व इंसाफ़ के लिए परिंदे के मामले में दो हकम बनाए हैं । आदमी और इसकी बीवी के मामले में दो हकम बनाए हैं । तो तुम्हारे इख़्तिलाफ़ में जो इनसे बड़ा है , दो हकम क्यों नहीं हो सकते।

(39029) हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन रफ़ीअ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली सिफ़्फ़ीन गए तो उन्होंने हज़रत अबू मसऊद को लोगों का हाकेम बनाया। उन्होंने जुमा के दिन लोगों को ख़ुत्बा दिया तो लोगों को कम पाया। तो फ़रमाया ऐ लोगों! बाहर निकलो, जो बाहर निकला वो मामून होगा। बाख़ुदा हम जानते हैं कि तुम में से बाज़ लोग इस सूरत को नापसंद समझते हैं और बोझल ख़्याल करते हैं। बाहर निकलो जो बाहर निकला वो अमन पाएगा। बाख़ुदा हम इस चीज़ को आफ़ियत नहीं समझते कि ये दो जमाअतें लड़ें और एक दूसरे से डरे। बल्कि आफ़ियत इसमें है कि अल्लाह तआला उम्मते मुहम्मदिया की इस्लाह फ़रमाए और इनको जमा कर दे। मैं तुम्हे हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के बारे में बताता हूं और जो लोगों ने उनसे इन्तक़ाम लिया। लोगों ने इन्हें किसी हक़ के साबित करने के लिए शहीद नहीं किया बल्कि वो इन नअमतों पर हसद करते थे जो अल्लाह ने हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को अता फ़रमायी थीं।

जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) आए तो आपने फ़रमाया कि ऐ फ़रोख़! क्या आपने वो बात की जो मैंने सुनी है? आप एक ऐसे बूढ़े हैं जिसकी अक़ल ख़तम हो चुकी है। इन्होंने कहा कि मेरी मां ने मेरा नाम इस नाम से अच्छा रखा है जो आपने मुझे दिया है। क्या मेरी अक़्ल चली गई है और मेरे लिए अल्लाह और इसके रसूल (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) की तरफ़ जन्नत वाजिब हो गई है। आप भी इस बात को जानते हैं। मेरी अक़्ल बाक़ी नहीं रही। हम बाहम गुफ़्तगू किया करते थे कि आख़िर शर है।

जब वो सैलहैन या क़ादसिया में थे तो लोगों के सामने आए और इनके बालों से पानी टपक रहा था, यूं महसूस होता था कि वो अहराम की तैयारी कर रहे हैं। जब इन्होंने सवारी पर

सवार होने का इरादा किया तो लोगों ने कहा कि ऐ अबू मसऊद! हमें कोई नसीहत फ़रमा दिजिये। इन्होंने फ़रमाया कि तुम पर तक़्वा लाज़िम है और मुसलमानों की जमाअत के साथ जुड़े रहो, क्योंकि मुसलमानों की जमाअत गुमराही पर जमा नहीं हो सकती। लोगों ने फिर नसीहत की दख़्वास्त की, तो आपने फ़रमाया कि तुम पर तक़्वा लाज़िम है और मुसलमानों की जमाअत के साथ जुड़े रहो, नेक आदमी राहत पाता है या बुरे से राहत पाई जाती है।

(39030) हज़रत मुहम्मद बिन अमरह बिन ख़ज़ैय्मा बिन साबित फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद जंगे सिफ्फीन और जमल में हथियार से दूर रहे। लेकिन जब हज़रत अम्मार शहीद हो गए तो इन्होंने अपनी तलवार नयाम से निकाल ली और कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) को फ़रमाते हुए सुना है कि अम्मार को एक बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी। फिर इन्होंने क़िताल किया और शहीद हो गए।

(39031) हज़रत उम्रो बिन आस (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया कि अम्मार को एक बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।

(39032) हज़रत अबू बख़्तरी फ़रमाते हैं कि जब सिफ़्फ़ीन में जंग तेज़ हो गई तो हज़रत अम्मार ने दूध का प्याला मंगवा कर पिया और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) ने मुझसे फ़रमाया था कि तुम दुनिया में आख़िरी चीज़ दूध पियोगे।

(39033) अब्दुल्लाह बिन सनान असादि फ़रमाते हैं कि मैंने जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) को देखा, इनके हाथ में रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) की ज़ुल्फ़िक़ुआर नामी तलवार थी। हम इनके इर्द गिर्द रहते थे लेकिन वो हमें पीछे छोड़ देते थे, वो हमला करते फिर आते फिर हमला करते। फिर वो अपनी तलवार लाए तो वो दो टुकड़ों में तक़सीम हो चुकी थी। आपने फ़रमाया कि यह तुम्हारे लिए उज़्र पेश करती है।

(39034) हज़रत शअबा फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हकम से सवाल किया है क्या अबू अय्यूब सिफ़्फ़ीन की जंग में जंग में शरीक हुए थे ? इन्होंने फ़रमाया कि वो इसमें तो नहीं लेकिन यौमुन नहर में शरीक थे।

(39035) यज़ीद बिन असिम कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) से सिफ़्फ़ीन के मक़्तूलीन का हुक्म पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि उनके और हमारे मक़्तूल सब जन्नती हैं, मामला मेरा और मुआविया का रह जाता है।

ख़वारिज का बयान

(39036) हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के सामने एक मर्तबा ख़वारिज का ज़िक्र आया तो आपने फ़रमाया कि इनमें एक आदमी है जिसका हाथ मुकम्मल नहीं है। अगर मुझे इस बात का अन्देशा नहीं होता कि तुम मेरी बात का इंकार करोगे , तो मैं तुम्हे वो बात ज़रूर बताता । जिसका अल्लाह तआला ने अपने नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) की ज़बान पर उन लोगों से वादा किया है , जो ख़वारिज से क़िताल करेंगे। रावी कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि क्या आपने ये बात ख़ुद रसूल्लुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) से सुनी है। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया कि रब्बे काबा की क़सम! मैंने सुनी है। ये बात आपने तीन मर्तबा फ़रमाई।

(39037) हज़रत यसीर बिन उम्रो कहते हैं कि मैंने हज़रत सहल बिन हनीफ़ से सवाल किया कि क्या आपने रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) को ख़वारिज का तज़किरह फ़रमाते सुना है ? इन्होंने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) को सुना है। आपने अपने दस्ते मुबारक से मशरिक़ की तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया कि यहां से एक ऐसी क़ौम का ख़रुज होगा जो ज़बानों से क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीने इस्लाम से इस तेज़ी से निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकलता है।

(38038) हज़रत अब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया कि अन्क़रीब एक ऐसी क़ौम का ज़हूर होगा जिनके अफ़राद कम उम्र के होंगे, अक़्ल के अंधे होंगे, जब बात करेंगे तो लोगों में सबसे ख़ूब बात कहेंगे। ज़बानों से क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीने इस्लाम से इस तेज़ी से निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। जिसे इनका सामना हो इनसे क़िताल करे क्योंके इनसे क़िताल करना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े अज्र की बात है।

(39039) हज़रत इब्ने अबी औफ़ा से रिवायत है कि रसुलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی آلِہٖ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया के ख़वारिज जहन्नम के कुत्ते हैं।

(39040) हज़रत अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के सामने ख़वारिज का तज़किरह आया तो इन्होंने फ़रमाया कि ये बदतरीन लोग हैं।

(39041) हज़रत अबू सईद खुदरी (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने बुढ़ापे में (जबकि उनके हाथ भी कांप रहे थे) फ़रमाया कि ख़वारिज से क़िताल करना मेरे नज़दीक मुशरिकीन से क़िताल करने से ज़्यादा अफज़ल है

(39042) हज़रत नाफ़ेअ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत इब्ने उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने नज्दह के बारे में सुना कि वो मदीना आ रहा है और औरतों को क़ैदी बना रहा है और बच्चों को क़त्ल कर रहा है। हज़रत इब्ने उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया तो हम उसे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दे सकते हैं। फिर आपने उसके क़िताल का इरादा किया और लोगों को इसकी तर्ग़ीब दी। इनसे कहा गया कि लोग आपकी मअयत में क़िताल के लिए तैयार नहीं होंगे और हमें ख़ौफ़ है कि आप को अकेला छोड़ दिया जाएगा। इसके बाद हज़रत इब्ने अमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इससे तअरज़ करने का इरादह तर्क कर दिया।

(39043) हज़रत अअमश कहते हैं कि मैंने अस्लाफ़ को कहते हुए सुना है कि अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद ने ख़वारिज से जंग की।

(39044) हज़रत अबूज़र (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बाद एक क़ौम होगी जो क़ुरआन तो पढ़ते होंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से यूं निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। वो फिर दीन में वापस नहीं आएंगे। वो बदतरीन मख़्लूक़ और बदतरीन अख़्लाक़ वाले हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामत फ़रमाते हैं कि मैंने इस रिवायत का तज़किरह हज़रत राफ़ेअ बिन उम्रो से किया तो इन्होंने फ़रमाया के मैंने भी रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) को ये फ़रमाते हुए सुना है।

(39045) हज़रत सलमा हमदानी अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के इन्तज़ार में उनके दरवाज़े पर बैठे थे, वो तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) ने हमसे बयान किया कि एक क़ौम क़ुरआन मजीद को पढ़ती होगी लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वो इस्लाम से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर कमान से निकलता है। ये हदीस बयान करने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कि शायद उनसे ताल्लुक़ रखने वाले बहुत से लोग तुम में से होंगे। हज़रत उम्रो बिन सलमा फ़रमाते हैं कि

हमने उनमें से अक्सर लोगों को देखा कि यौमे नहरवान में ख़वारिज के साथ हमसे क़िताल कर रहे थे।

(39046) हज़रत अबूतहया कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने एक ख़ारजी को फ़ज्र नमाज़ में कुरआन मजीद की आयत पढ़ते हुए सुना

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

तुम्हारी ओर और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है कि "यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।"

ये सुनकर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने अपनी सूरत को छोड़ दिया और यहां से पढ़ा

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ

अतः धैर्य से काम लो निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है और जिन्हें विश्वास नहीं, वे तुम्हें कदापि हल्का न पाएँ ।

(39047) हज़रत अबू ग़ालिब फ़रमाते हैं कि मैं दमिश्क की जामा मस्जिद में था कि लोग सत्तर ख़ारजियों के सिर लेकर आए। इन सिरों को मस्जिद की सीढ़यों पर नस्ब कर दिया गया। जब हज़रत अबू अमामा (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) तशरीफ़ लाए और इनके सिरों को देखा, तो फ़रमाया कि ये जहन्नम के कुत्ते हैं। आसमान के नीचे मारे जाने वाले ये बदतरीन मख़्लूक़ हैं। और जिन्हें इन्होंने क़त्ल किया है वो आसमान के नीचे सबसे बेहतर मक़्तूल हैं। फिर वो रोए और मेरी तरफ़ देखा और मुझसे फ़रमाया कि ऐ अबू ग़ालिब! तुम इन लोगों के शहर से हो ? मैंने कहा जी हां। इन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम्हें महफ़ूज़ रखा। फिर फ़रमाया कि क्या तुम सूरह आले इमरान पढ़ते हो? मैंने कहा जी हां। उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ।

مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ

वे सुदृढ़ आयतें हैं जो किताब का मूल और सारगर्भित रूप हैं और दूसरी उपलक्षित, तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ हैं वे फ़ितना (गुमराही) का तलाश और उसके आशय और परिणाम की चाह में उसका अनुसरण करते हैं जो उपलक्षित हैं। जबकि उनका परिणाम बस अल्लाह ही जानता हैं,

और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ

जिस दिन कितने ही चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने ही चेहरे काले पड़ जाएँगे, तो जिनके चेहेर काले पड़ गए होंगे । उनसे कहा जाएगा, "क्या तुमने ईमान के पश्चात इनकार की नीति अपनाई ? तो लो अब उस इनकार के बदले में जो तुम करते रहे हो, यातना का मज़ा चखो।"

हज़रत अबू ग़ालिब फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अबू अमामा! मैंने आपको देखा के आपकी आंखों से आंसू बह रहे थे, इसकी क्या वजह है? इन्होंने फ़रमाया हां! इन पर रहमत की वजह से मेरी आंखों से आंसू निकल रहे हैं। वो अहले इस्लाम से थे। बनी इस्राईल वाले इकहत्तर फ़िर्क़ों में तक़सीम हुए और इस उम्मत में एक फ़िर्क़े का इज़ाफ़ा होगा, वो सब जहन्नम में जाएंगे सिवाए बड़ी जमाअत के। इन पर वो है जिसके मुकल्लफ़ बनाए गए और तुम पर वो है जिसके तुम मुकल्लिफ़ बनाए गए। अगर तुम इस बड़ी जमाअत की इताअत करोगे तो हिदायत पा जाओगे और पैग़ाम देने वाले पर तो बात खोल खोल कर बयान कर देना ही होता है। बात को सुनना और इताअत करना फ़िर्क़े में पड़ने और मअसियत से बेहतर है। एक आदमी ने इनसे कहा कि ऐ अबू अमामा! ये बात आप अपनी राए से कह रहे हैं या आपने रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) से सुनी है? इन्होंने फ़रमाया कि अगर मैं ये बात अपनी राए से कहूं तो दीन के मामले में जराअत करने वाला बन जाउंगा! मैंने ये बात रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) से एक, दो मर्तबा नहीं बल्कि सात मर्तबा सुनी है।

(39048) हज़रत अबू मजलज़ फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ) ने अपने साथियों को ख़वारिज के साथ मअरका आराई से उस वक़्त तक मना किया जब तक वो ख़ुद छेड़ख़ानी ना करें। चुनांचे ख़वारिज हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब के पास से गुज़रे और इन्हें पकड़ लिया। फिर उनमें से एक शख़्स एक खजूर के दरख़्त से गिरी हुई खजूर को उठा कर खाने लगा तो एक शख़्स उसे टोकते हुए बोला कि ये एक ज़िम्मी की खजूर है तुम इसे कैसे हलाल समझते हो? चुनांचे उसने खजूर मुंह से फेंक दी। फिर वो एक खंज़ीर के पास से गुज़रे तो एक आदमी ने उसे अपनी तलवार मारी। एक शख़्स इसे टोकते हुए बोला कि ये एक ज़िम्मी का खंज़ीर है तुम इसे अपने लिए कैसे हलाल समझते हो? हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हे उन चीज़ों से ज़्यादा क़ाबिले अहतराम चीज़ का ना बताऊं ? उन्होंने कहा बताइए, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने फ़रमाया कि 'मैं हूं'। वो आगे बढ़े और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब की गर्दन काट डाली।

फिर हज़रत अली (رضي الله عنه) ने इनकी तरफ़ पैग़ाम भेजा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब के क़ातिल को मेरी तरफ़ भेज दो। इन्होंने जवाब दिया कि हम उनका क़ातिल आप को कैसे भेजें, हम सबने उन्हें क़त्ल किया है। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने पूछा कि क्या तुम सबने उन्हें क़त्ल किया है? इन्होंने कहा जी हां। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने अल्लाहुअकबर कहा और फिर अपने साथियों को उन पर चढ़ाई का हुक्म दे दिया। और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! तुम में से दस आदमी क़त्ल नहीं होंगे और उनमें से दस आदमी बाक़ी नहीं बचेंगे। पस लोगों ने इनसे क़िताल किया।

हज़रत अली (رضي الله عنه) ने इन्हें हुक्म दिया कि इनमें ज़ुस्सद्या को तलाश करो। लोगों ने इसे तलाश किया और इसे हज़रत अली (رضي الله عنه) के पास लाया गया उन्होंने पूछा कि इसे कौन जानता है। फिर सिर्फ़ एक आदमी मिला जो उसे जानता था। उसने कहा के मैंने इसे में देखा था। मैंने इससे पूछा कि तुम कहां जा रहे हो? उसने कहा कि उस तरफ़, और फिर इसने कूफ़ा की तरफ़ इशारह किया जबकि मुझे इसका इल्म ना था। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि ये जिनों में से है, इसने सच कहा।

(39049) हज़रत अबू मजलज़ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رضي الله عنه) ने ख़वारिज पर चढ़ाई की । तो मुसलमान भी उन पर टूट पड़े, ख़ुदा की क़सम सिर्फ़ नौ मुसलमान शहीद हुए थे कि इन्होंने ख़वारिज को तहस नहस कर दिया।

(39050) हज़रत सईद बिन जम्हान फ़रमाते हैं कि ख़वारिज ने मुझे अपनी जमाअत में दाख़िल होने की दावत दी, क़रीब था कि मैं इन में शमूलियत इख़्तियार कर लेता। इस अस्नाअ में अबू बिलाल की बहन ने ख़वाब में अबू बिलाल अहलब को देखा और इससे पूछा के ऐ मेरे भाई ! तुम्हे क्या हुआ ? उसने कहा कि हमें तुम्हारे बाद जहन्नम के कुत्ते बना दिया गया।

(39051) बनू अब्दुल क़ैय्स के एक आदमी बयान करते हैं कि मैं ख़वारिज के साथ था कि मैंने इनमें ऐसी चीज़ों को देखा जिन्हें मैं पसंद नहीं करता था। लिहाज़ा मैंने इनसे जुदाई का फ़ैसला कर लिया। मैं अभी इन्ही की एक जमाअत के साथ था कि इन्होंने एक आदमी को देखा, जिसके और इनके दर्मियान नहर हाइल थी। इन्होंने उस आदमी को पकड़ने के लिए नहर अबूर की और कहा कि शायद हमने तुम्हे डरा दिया। उसने कहा 'हां कुछ यूं ही है'। इन्होंने पूछा कि तुम कौन हो ? उस आदमी ने कहा कि मैं अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब बिन

अरत हूं। इन्होंने कहा कि तुम्हारे पास एक हदीस है जो तुम अपने वालिद से बयान करते हो। इन्होंने फ़रमाया कि हां मेरे वालिद ने मुझसे रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) के हवाले के बयान किया कि फ़ितना आने वाला है। इसमें बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और खड़ा होने वाला चलने वाले से बेहतर होगा अगर तुम अल्लाह के मक़्तूल बन्दे बन सकते हो तो बन जाना । लेकिन अल्लाह के क़ातिल बंदे ना बनना। फिर वो लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब के नहर के क़रीब ले गए और इनकी गर्दन काट डाली। मैंने इनके ख़ून को नहर की लहरों पर बहते हुए देखा, फिर इन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब की एक हामिला बान्दी को बुलाया और इसके पेट को चाक कर डाला।

(39052) हज़रत जब्लह बिन सुहेम और इब्ने नज़्ला कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने ख़वारिज की एक तरफ़ एक लश्कर को रवाना फ़रमाया और इनसे फ़रमाया के ख़वारिज से इस वक्त तक क़िताल ना करना । जब तक इन्हें दावत ना दी जाए कि वो पहले वाले सालाना वज़ीफ़ा और अल्लाह व रसूलुल्लाह के अमान को क़बूल कर लें। लेकिन उन्होंने इस बात से इंकार किया और हमें गालम गलोच की।

(39053) हज़रत ज़ैद बिन बहब कहते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने देज़जान के पुल पर मदाइन में हमारे सामने ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया। इस ख़ुत्बे में आपने कहा कि मुझे ख़बर दी गई कि एक जमाअत मशरिक़ की तरफ़ से ख़रुज करने वाली है इनमें ज़ुस्सद्या भी है। मुझे नहीं मालूम कि ये वही लोग हैं या कोई और हैं ? रावी कहते हैं कि वो लोग एक दूसरे से मिलते हुए चले, हरोरिया ने कहा कि इनसे इस तरह बात ना करना जिस तरह तुमने इनसे हर्वराअ के दिन बात की थी। फिर इन्होंने इनसे बात की और तुम लौट गए। फिर इनके दर्मियान नेज़े चलने लगे। हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के कुछ साथियों ने कहा कि नेज़ों को काट दो और फिर वो घूम कर आए और इनसे क़िताल किया। फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के साथियों से बारह या तैरह लोग शहीद हुए। फिर इन्होंने कहा कि उसे तलाश करो, इन्होंने उसे तलाश किया और पा लिया। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ना तुने झूठ बोला और ना तुझसे झूठ बोला गया। अमल करते रहो और पुर उम्मीद ना हो। अगर तुम उम्मीद पर सहारा ना लगा लो तो मैं तुम्हे वो बात बताऊं जो अल्लाह तआला ने अपने नबी (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) की ज़बाने फ़ैय्ज़ तर्जुमान से जारी फ़रमायी है। फिर फ़रमाया कि

हमारे साथ यमन के भी कुछ लोग थे। लोगों ने कहा कि वो कैसे ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने फ़रमाया कि इनकी ख़्वाहिशात हमारे साथ थीं।

(39054) हज़रत अबू बर्का साइदि फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने ज़ुस्सद्या को क़त्ल कर दिया तो हज़रत सअद ने फ़रमाया के इब्ने अबी तुआलिब ने बिल के सांप को मार डाला।

(39055) हज़रत अबू रज़ैय्न फ़रमाते हैं कि जब हकूमत सिफ़्फ़ीन में थी, और ख़वारिज ने हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को छोड़ दिया और इन्हें छोड़ कर चले गए। तो ख़वारिज एक लश्कर में थे और हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) दूसरे लशकर में थे। जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) अपने लश्कर के साथ कूफ़ा वापस आ गए और वो अपने लश्कर में हरोराअ चले गए तो हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इनकी तरफ़ इब्ने अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को भेजा लेकिन उन्होंने कोई गुंजाइश ना पाई। फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) इनसे गुफ़्तगू के लिए तशरीफ़ ले गए और इनसे बात चीत हुई और सब आपस में राज़ी हो गए। और कूफ़ा वापस आ गए। ये रज़ा मंदी दो या तीन दिन क़ाइम रही।

फिर अश्अस बिन क़ैय्स आए जो के हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के पास अक्सर आया करते थे और उन्होंने कहा कि लोग कह रहे कि आपने उनसे उनके कुफ़्र के बावजूद रुजूअ कर लिया। अगले दिन या जुमुआ के दिन हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) मिम्बर पर जलवह अफ़रोज़ हुए, अल्लाह तआला की हमदो सना बयान की और ख़ुत्बा में इन्हें नसीहत फ़रमायी। लोगों से इनके अलग होने का तज़्किरह किया, जिस चीज़ में इन्होंने मफ़ार्क़त की इसका इनहें हुक्म दिया, हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इनकी और इनके तरीक़ाए कार की मज़म्मत फ़रमायी। जब वो मंबर से नीचे तशरीफ़ लाए तो मस्जिद के कोनों से आवाज़ें आने लगीं कि अल्लाह के सिवा किसी का हुकम नहीं ! हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि तुम्हारे बारे में अल्लाह के हुक्म का इंतज़ार कर रहा हूं। फिर मिंबर पर इन्हें हाथ से ख़ामोश रहने का इशारह फ़रमाया। इतने में ख़ारजियों का एक आदमी अपनी उंगलियां कानों पर रख कर ये आयत पढ़ते हुए आया

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।

(39056) हज़रत इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) के सामने ख़वारिज का तज़्किरह किया गया, इनकी इबादत और मसाई का तज़्किरह किया गया तो इन्होंने फ़रमाया कि यहूदियों और ईसाइयों से ज़्यादा कोशिश करने वाले और उनसे ज़्यादा नमाज़ पढ़ने वाले नहीं हैं।

(39057) हज़रत इब्ने अब्बास (رضي الله عنه) के सामने तज़्किरह किया गया तो ख़वारिज क़रआन को हमेशा बुनियाद क़रार देते हैं उन्होंने फ़रमाया कि इसके मोहकम पर ईमान लाते हैं और इसके मुताशाबा की वजह से हलाक हो जाते हैं।

(39058) हज़रत बशर बिन शग़ाफ़ फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (رضي الله عنه) ने मुझसे ख़वारिज के बारे में सवाल किया तो मैंने अर्ज़ किया कि वो सबसे लम्बी नमाज़ पढ़ने वाले और सबसे ज़्यादा रोज़े रखने वाले हैं। लेकिन जब वो पुल को पीछे छोड़ देते हैं तो ख़ून बहाते हैं और माल छीन लेते हैं। उन्होंने फ़रमाया कि इनके बारे में तुमसे यही सवाल किया जाएगा। मैंने उनसे कहा था कि हज़रत उस्मान को शहीद नही करो, इन्हें छोड़ दो ख़ुदा की क़सम अगर तुम इन्हें गयारह रातों तक छोड़ दो तो वो अपने बिस्तर पर इंतक़ाल कर जाएंगे। लेकिन इन्होंने ऐसा नहीं किया। जब कोई नबी क़त्ल किया जाता है तो इसके बदले में सत्तर हज़ार लोग क़त्ल होते हैं और जब कोई ख़लीफ़ा क़त्ल किया जाता है तो इसके बदले में पेंतिस हज़ार लोग क़त्ल होते हैं।

(39059) हज़रत अबू तुफ़ैय्ल फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) के ज़माने में एक बच्चा पैदा हुआ। आपने इसे दुआ दी और इसकी पैशानी की जिल्द को छुआ। रावी कहते हैं कि इस बच्चे की पैशानी पर घोड़े के बालों जैसा ख़ुमदार एक बाल निकला। फिर वो लड़का जवान हो गया और जब वो ख़वारिज का ज़माना आया तो वो ख़वारिज की तरफ़ माइल हो गया। फिर इसकी पैशानी से वो बाल गिर गया। उसके बाप ने उसको पकड़ कर बांध दिया क्योंकि उसे अंदेशा था कि कहीं वो ख़वारिज के साथ ना मिल जाए। हम एक मर्तबा उससे मिले और इसे नसीहत की और हमने उससे कहा कि क्या तुम नहीं देखते कि रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) की बर्कत भी तुमहारी पैशानी से गिर गई है। हम उसे इसी तरह समझाते रहे यहां तक कि उसने अपनी राए से रुजूअ कर लिया। फिर अल्लाह तआला ने इसकी पैशानी के बालों को वापस कर दिया और उसने तौबा कर ली और अपनी इस्लाह कर ली।

(39060) हज़र अबू हुरैरा (رضي الله عنه) के सामने ख़वारिज का ज़िक्र किया गया तो इन्होंने फ़रमाया कि ये बदतरीन मख़लूक़ हैं।

(39061) हज़रत अबू बर्का साइदि फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رضي الله عنه) ने ज़ुस्सद्या को क़त्ल कर दिया तो हज़रत सअद ने फ़रमाया कि इब्ने अबी तालिब ने बिल के सांप को मार डाला।

(39062) हज़रत आसिम बिन ज़मरह फ़रमाते हैं कि ख़वारिज ने हकूमत के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और ये नारा बुलंद किया कि अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने इस पर फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं, लेकिन ये लोग कहते हैं कि किसी की इमारत नहीं हालांकि लोगों के लिए एक अमीर का होना ज़रूरी है ख़वाह वो नेक हो या बद। मौमिन इसकी इमारत में काम करे, काफ़िर इसमें ज़िंदगी गुज़ारे और अल्लाह तआला उसे उसकी मुद्दत तक पहुंचा दे।

(39063) हज़रत मुग़ीरह फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़वारिज से गुफ़्त व शनैद की, इनमें से जिसने रुजूअ करना था रुजूअ कर लिया। इनके एक टोले ने रुजूअ करने से इंकार कर दिया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उन की तरफ़ घुड़सवारों का एक लश्कर भेजा और इन्हें हुक्म दिया कि वो वहां चलें जाएं जहां ख़वारिज का क़याम है। इनसे कोई तअरज़ ना करें और ना इन्हें भड़काएं, अगर वो क़त्ल करें या ज़मीन पर फ़साद मचाएं तो इन पर हमला कर दें और इनसे क़िताल करें और अगर वो क़िताल ना करें और ज़मीन पर फ़साद ना मचाएं तो इन्हें छोड़ दें और इन्हें इनका काम करने दें।

(39064) हज़रत अबू सल्मा फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (رضي الله عنه) से अर्ज़ किया कि क्या आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैय्हि वसल्लम को कभी हरोरिया का तज़्किरह करते हुए सुना है। हज़रत अबू सईद (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि हां, मैंने रसूलुल्लाह (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) को एक क़ौम का तज़्किरह करते सुना जो इबादत करते होगे, आप ने फ़रमाया कि तुम उनकी इबादत के सामने अपनी इबादत को हक़ीर समझोगे , और उनके रोज़े के सामने अपने रोज़े को हक़ीर समझोगे , वो दीन से यूं निकल जाएंगे जिस तरह तीर कमान से निकल जाता है। वो अपनी तलवार को लेगा फिर वो अपने तीर के फल को देखेगा वहां कुछ ना पाएगा, इस के अक़्बी हिस्से को देखेगा वहां भी कुछ ना पाएगा। वो अपने तीर

की लकड़ी को देखेगा वहां भी कुछ ना पाएगा, फिर तीर के परों को देखेगा और इसे शक होगा कि इसने कुछ देखा भी है या नहीं।

(39065) हज़रत ग़ीलान बिन जरीर फ़रमाते हैं कि मैंने अबू क़लाबा के साथ मक्का जाने का इरादा किया। मैंने इनसे इजाज़त तलब की। मैंने कहा कि क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ? इन्होंने फ़रमाया कि हां, अगर तुम हरोरी ना हो।

(39066) हजरत कअब फ़रमाते है कि जिसे ख़वारिज शहीद करे, उस के लिए दस नूर है, और उसे शुहदा के नूर से दो नूर ज़्यादा दिए जायेगे ।

(39067) हज़रत इब्न ए उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि नज्दह और इसके साथियों ने हमारे ग़ैर से तअरज़ किया, अगर मैं इनमें होता और मेरे साथ मेरा हथियार होता तो मैं इनसे क़िताल करता।

(39068) हज़रत हसन के वालिद फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का ख़त हमारे सामने पढ़ा गया, इसमें लिखा था कि अगर हरौरी लोग मुहतरम ख़ून को बहाएं और राहज़नी करें तो हम इनसे बरी हैं और आपने उनसे क़िताल का हुक्म दिया।

(39069) हज़रत हबीब बिन अबी साबित फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबू वाइल के पास आया और मैंने इनसे उस क़ौम के बारे में सवाल किया जिनसे हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने क़िताल किया था। मैंने कहा कि इन्होंने हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को क्यों छोड़ा? इनके ख़ून को हलाल क्यों समझा? और हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इन्हें किस चीज़ की दावत दी थी? फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इनके ख़ून को किस बिना पर हलाल क़रार दिया? इन्होंने फ़रमाया कि जब सिफ़्फ़ीन के मक़ाम पर अहले शाम में क़त्ल ज़ोर पकड़ गया तो हज़रत मुआविया और इनके साथियों ने एक पहाड़ को ठिकाना बनाया। हज़रत उमर बिन आस (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) की तरफ़ मुस्हफ़ भेजो, ख़ुदा की क़सम! वो इसका इंकार नहीं करेंगे। पस एक आदमी मुस्हफ़ लाया और वो ये एलान कर रहा था कि हमारे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की किताब है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّـهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा प्रदान हुआ। उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है कि वह उनके बीच फैसला करे, फिर भी उनका एक गिरोह उपेक्षा करते हुए मुँह फेर लेता है?

इस पर हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया कि हां, हमारे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की किताब है और मैं इस पर अमल करने का तुमसे ज़्यादा पाबंद हूं।

(2) फिर ख़वारिज आए और इन दिनों हम इन्हें "क़राअ" कहा करते थे। वो अपनी तलवारों को कंधे पर लटका कर लाए और कहने लगे ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या हम इन लोगों की तरफ़ पैश क़दमी ना करेंगे कि अल्लाह इनके और हमारे दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे। इस पर हज़रत सहल बिन हनीफ़ ने फ़रमाया ऐ लोगों! अपने नफ़्स की मज़म्मत करो, हम हुदीबिया के मौक़ा पर रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के साथ थे। अगर हम क़िताल को मुस्तहिसन समझते तो क़िताल करते। यह वो सुलह का मुआहिदह था जो मुशरिकीन और रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के दर्मियान हुआ था। इस मौक़ा पर हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि हम हक़ पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है ? नबी ए पाक (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया क्यों नहीं। ऐसा ही है। हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया कि हमारे मक़्तूल जन्नत मैं और इनके मक़्तूल जहन्नम में नहीं जाएंगे ? आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया कि ऐसा ही है। हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया कि फिर हम अपने दीन में ज़िल्लत को क्यों क़बूल करें, और वापस लौट जाएं जबकि अल्लाह ने इनके और हमारे दर्मियान फ़ैसला नहीं फ़रमाया है। हुज़ूरे पाक (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया के ऐ इब्ने ख़ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूं, अल्लाह मुझे हरगिज़ ज़ाए नहीं करेगा।

(3) फिर हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) गुस्से की हालत में हज़रत अबू बकर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा के ऐ अबू बकर! क्या हम हक़ पर और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं है? हज़रत अबू बकर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया क्यों नहीं। ऐसा ही है। हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया कि क्या हमारे मक़्तूल जन्नत मैं और इनके मक़्तूल जहन्नम में नहीं जाएंगे? हज़रत अबू बकर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया ऐसा ही है। हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया कि फिर हम अपने दीन में ज़िल्लत को क्यों क़बूल करें, और वापस लौट जाएं जबकि अल्लाह ने इनके और हमारे दर्मियान फ़ैसला नहीं फ़रमाया है। हज़रत अबू बकर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने ख़ताब! वो अल्लाह के रसूल है, अल्लाह उन्हें हरगिज़ ज़ाए नहीं करेगा।

(4) फिर अल्लाह तआला ने हज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّمَ) पर सूरह फ़तह को नाज़िल किया, आपने किसी को भेज कर हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को बुलाया और इनके सामने इस सूरत की

तिलावत फ़रमाई। हज़रत उमर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या ये फ़तह है? आपने फ़रमाया जी हां। फिर वो ख़ुश हो गए और वापस चले गये।

(5) इसके बाद हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़रमाया कि ऐ लोगों! यह फ़तह है। फिर हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने इस फ़ैसले को क़बूल फ़रमाया और वापस चले गए और लोग भी वापस चले गए।

(6) हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के इस फ़ैसले को क़बूल करने के बाद ख़वारिज के दस हज़ार से ज़्यादा लोग हरोराअ चले गए। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने इन्हें अल्लाह का वास्ता देकर वापस आने को कहा लेकिन इन्होंने इंकार कर दिया। फिर इनके पास सअसआ बिन सऔहान आए और अल्लाह के वास्ता दिया और उनसे पूछा कि तुम किस बुनियाद पर अपने ख़लीफ़ा से क़िताल करोगे? इन्होंने कहा कि हमें फ़ित्ना का ख़ौफ़ है। उसने कहा कि आने वाले साल के फ़ितने से अवाम को अभी से गुमराह मत करो। वो वापस चले गए और इन्होंने कहा कि हम अपने इलाक़े में जा रहे हैं क्योंके हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) ने फ़ैसले को क़बूल कर लिया है। हमने उसी वजह से क़िताल किया जिस वजह से सिफ़्फ़ीन की जंग में क़िताल किया था अगर वो फ़ैसले को क़बूल करने से इंकार कर दें तो हम इनके साथ क़िताल करेंगे।

(7) फिर वो चले और जब वो नहरवान पहुंचे तो एक जमाअत इनसे अलग हो गई और लोगों को क़त्ल की धमकी देने लगी। इनके साथियों ने कहा कि तुम्हारा नास हो क्या हमने इस बात पर हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से अलैहदगी इख़्तियार की थी। हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) को इनकी ये ख़बर पहुंची तो आपने लोगों में खड़े होकर ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया और इसमें फ़रमाया कि तुम क्या देखते हो? क्या तुम शाम की तरफ़ जा रहे हो या इन लोगों की तरफ़ लौट रहे हो ? उन्होंने कहा नहीं बल्कि हम इन लोगों की तरफ़ लौट रहे हैं। फिर इन्होंने इनके मामले का तज़्किरह किया और इनके बारे में वो बात बयान की जो रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इनके बारे में फ़रमाई थी कि लोगों के इख़्तिलाफ़ के वक़्त एक फ़िरक़ा का ख़रुज होगा, उन्हें हक़ के सबसे क़रीबतर फ़िरक़ा क़त्ल करेगा। इस ख़रुज करने वाले फ़िर्क़े में एक आदमी का हाथ औरत के पसतान की तरह होगा।

फिर ये लोग चले और नहरवान जाकर एक दूसरे से मिल गए। वहां शदीद क़िताल हुआ, हज़रत अली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) के भेजे हुए घुड़सवार इस जंग के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हो रहे थे,

आप खड़े हुए और फ़रमाया कि ऐ लोगों! अगर तुम मेरी ख़ातिर लड़ रहे हो तो ख़ुदा की क़सम मेरे पास तुम्हे देने के लिए कुछ नहीं और अगर तुम अल्लाह के लिए लड़ रहे हो तो ये क़िताल तुम्हारा नहीं ये लड़ाई अल्लाह की है। फिर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के साथियों ने भरपूर हमले किए और ख़ारजियों के घोड़े उनके हाथों से निकल गए और वो ज़मीन पर मुंह के बल गिर पड़े। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि उस आदमी (जिसका हाथ औरत के पसतान की तरह है) को तलाश करो। लोगों ने तलाश किया लेकिन वो आदमी ना मिला। इस पर कुछ लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि अली ने हमें हमारे भाईयों से लड़वा दिया और हमने अपने भाईयों को मार डाला (क्योंके इनमें पेशीन गोई के मुताबिक़ वो आदमी नहीं है) ये बात सुनकर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की आंखों में आंसू आ गए। आप अपनी सवारी पर सवार हुए और उस जगह आए जहां मक़्तूलीन पड़े थे। आप उन्हें इनके पाऊं से खीचने लगे तो इनमें वो आदमी मिल गया जिसकी पेशीन गोई की गई थी। ये देख कर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने اَللّٰہُاَکْبَرُ कहा, लोग भी ख़ुश हुए और वापस आ गए। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि मैं इस साल जंग नहीं करूंगा। फिर आप कूफ़ा की तरफ़ वापस चले गए और वहां शहीद कर दिए गए। फिर हज़रत हसन (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) को ख़लीफ़ा बनाया गया और आपने वालिद माजिद के नक़्शे क़दम पर चलते रहे, फिर हज़रत मुआविया (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के हाथ पर बैअत कर ली गई।

(39070) हज़रत ज़ैय्द बिन वहब फ़रमाते हैं कि यौमे नहरवान में हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) की ख़वारिज से मुथभेड़ हुई। नेज़े मुसलसल चलते रहे और ख़वारिज मारे गए। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि इनमें ज़ुस्सद्या को तलाश करो, लेकिन तलाश के बाद भी वो ना मिला। हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि ना मैंनें झूठ बोला और ना मेरे साथ झूठ बोला गया। उसे तलाश करो। जब फिर तलाश किया गया तो वो मक़्तूलिन के साथ एक जगह ज़मीन पर पड़ा था। इसके हाथ पर बिल्ली के पंजों जैसी कोई चीज़ थी। इसे देख कर हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) और लोगों ने اَللّٰہُاَکْبَرُ कहा और लोग भी ख़ुश हुए और हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) भी ख़ुश हुए।

(39071) बनू नस्र बिन मुआविया के एक साहब बयान करते हैं कि हम हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) के पास हाज़िर थे कि ख़वारिज का ज़िक्र छिड़ गया। एक आदमी ने इन्हें गाली दी तो हज़रत अली (رَضِیَاللّٰہُعَنْہُ) ने फ़रमाया कि उन्हें गाली मत दो। अगर वो इमाम-ए-आदिल के

ख़िलाफ़ ख़रुज करें तो इनसे क़िताल करो और अगर वो ज़ालिम इमाम के ख़िलाफ़ ख़रुज करें तो इनसे क़िताल ना करो। क्योंके इन्हें गुफ़्तगू का हक़ है।

(39072) हज़रत शरीक बिन शहाब हारसी कहते हैं कि मेरी ख़्वाहिश थी कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैय्हि वसल्लम के किसी ऐसे साथी से मिलूं। जो मुझे ख़वारिज के बारे में बताए। मैं यौमे अर्फ़ा को हज़रत अबू बर्ज़ह अस्लमी से मिला। वो अपने चंद साथियों के साथ थे। मैंने इनसे कहा कि मुझे कोई ऐसी बात सुनाएं जो आपने रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) से ख़वारिज के बारे में सुनी हो। इन्होंने फ़रमाया कि मैं तुम्हे इनके बारे में ऐसा वाक़्या सुनाउंगा जिसे मेरे कानों सुना और मेरी आंखों ने देखा है। हुआ यूं कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) के पास कुछ दनानीर लाए गए। आप इन्हें तक़्सीम करने लगे, आपके पास एक आदमी था जिसके बाल ढके हुए थे, इस पर दो सफ़ेद कपड़े थे, इसकी आंखों के दर्मियान सज्दों का निशान था। वो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) के क़रीब होकर आपसे वो दनानीर लेना चाहता था, लेकिन आपने उसे अता ना फ़रमाए। वो आपके चेहरा-ए-मुबारक की तरफ़ से आया लेकिन आपने उसे कुछ ना दिया, वो दाएं तरफ़ से आया, आपने उसे कुछ ना दिया, फिर वो बाएं तरफ़ से आया आपने उसे फिर भी कुछ ना दिया, फिर वो पीछे से आया तो आपने उसे फिर भी कुछ ना दिया। फिर वो कहने लगा ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ)! आज के दिन आपने तक़्सीम में इंसाफ़ से काम नहीं लिया। इस पर रसूलुल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) बहुत ज़्यादा ग़ुस्से में आए और आपने तीन मर्तबा फ़रमाया "ख़ुदा की क़सम! तुम अपने बारे में मुझसे ज़्यादा किसी को इंसाफ़ करने वाला नहीं पाओगे" फिर आपने फ़रमाया कि तुम पर मशरिक़ की तरफ़ से कुछ लोग ख़रुज करेंगे यह मुझे उनमें से लगता है। उनका तरीक़ाए कार ये होगा कि वो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर कमान से निकल जाता है, फिर वो इसमें वापस नहीं आएंगे। फिर आपने अपना हाथ सीने पर रखा , और फ़रमाया कि सिर मुंडाना इनका शआर होगा, इनका ख़रुज हमेशा होता रहेगा यहां तक के इनका आख़री शख़्स मसीह दज्जाल के साथ निकलेगा। फिर आपने तीन मर्तबा फ़रमाया कि जब तुम इन्हें देखो तो इनसे क़िताल करो। फिर आपने तीन मर्तबा फ़रमाया कि वो तख़्लीक़ और आदत के ऐतबार से बदतरीन लोग हैं।

(39073) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ऐसी क़ौम आएगी जो क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर कमान से निकल जाता है।

(39074) हज़रत इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہ) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन इस्लाम से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर कमान से निकल जाता है।

(39075) हज़रत अबू सलमा और हज़रत अतुआ बिन यसाल फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (رضی اللہ عنہ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने इनसे कहा कि क्या आपने रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) से हरऔरिया के बारे में कुछ सुना है? इन्होंने फ़रमाया कि हरऔरिया को तो मैं नहीं जानता, अल्बत्ता मैंने रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) को फ़रमाते हुए सुना है कि तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आएगी जिनकी नमाज़ों के सामने तुम अपनी नमाज़ों को मामूली समझोगे, जिनके रोज़े के सामने तुम अपने रोजों को और जिनकी इबादत के सामने तुम अपनी इबादतों को बे हैसियत समझोगे। वो क़ुरआन पढ़ते होंगे लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीन कमान से निकल जाता है।

(39076) हज़रत सअद बिन मालिक फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) ने इस ज़ुस्सुद्या का तज़्किरा किया जो अस्हाबे नहर के साथ था, आपने इसके बारे में फ़रमाया कि वो गढ़े का शैतान है, इस क़बीला-ए-बख़ीला का एक आदमी जिसका नाम अश्हब या इब्न अश्हब होगा उसे गढ़े में फैंकेगा । यह ज़ालिम क़ौम की अलामत होगा। अम्मार जहनी ने बयान किया कि क़बीला बख़ीला का एक आदमी आया जिसका नाम अश्हब या अश्हब था।

(39077) हज़रत उबैय्द हसन फ़रमाते हैं कि ख़वारिज ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से फ़रमाया कि हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ हज़रत उम्र बिन ख़त्तआब वाला मामला करें । हज़रत उम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इन्हें क्या हुआ, अल्लाह इन्हें मारे ! ख़ुदा की क़सम ! मैं रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم) के इलावा किसी को मुक़्तदा नहीं बनाऊंगा।

(39078) हज़रत अबू मजलज़ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ख़वारिज के क़ब्ज़े में थे। इस वक़्त इनका एक आदमी खजूर के एक दरख़्त के पास से गुज़रा और एक खजूर उठा ली। इसके साथियों ने इससे कहा कि तूने एक ज़िम्मी की खजूर उठा ली है ! फिर वो एक ख़ंज़ीर के पास से गुज़रे, एक आदमी ने इसे तलवार मारी तो इसके साथियों ने कहा कि तूने एक ज़िम्मी के ख़ंज़ीर को मार डाला! इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हे इन दोनों से ज़्यादा हुरमत वाले के बारे में ना बताऊं! इन्होंने कहा कि वो कौन है ? हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने फ़रमाया कि वो मैं हूं। मैंने नमाज़ नहीं छोड़ी , मैं फ़लां अमल नहीं छोड़ा और फ़लां अमल भी नहीं छोड़ा। इसके बावजूद भी इन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब को शहीद कर दिया। जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) इनके पास आए और इनसे कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह के क़ातिल हमारे हवाले कर दो, तो इन्होंने कहा कि हम उनके क़ातिल आपके हवाले कैसे कर दें हालांकि हम सब इनके ख़ून में शरीक हैं। इसके बाद हज़रत अली ने इनसे क़िताल को हलाल क़रार दिया।

(39079) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलामा इन लोगों में से हैं जो जंग जमल और जंग सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) की तरफ़ से शरीक थे, वो फ़रमाते हैं कि मुझे इन दोनों से बढ़ कर दुनिया की कोई चीज़ महबूब नहीं है।

(39080) हज़रत मस्अब बिन सअद फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद से सवाल किया कि क्या क़ुरआन मजीद की ये आयत क्या ख़वारिज के बारे में नाज़िल हुई है ।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا

कहो, "क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बर दें, जो अपने कर्मों की स्पष्ट से सबसे बढ़कर घाटा उठानेवाले हैं? यह वे लोग है जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते है कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे है

इन्होंने फ़रमाया कि नहीं ये आयत अहले किताब यहूद और नसारा के बारे में नाज़िल हुई है। यहूद ने मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) की तज़कीब की । और नसारा ने जन्नत का इंकार किया और कहा के इसमें खाना और पीना नहीं है। हरऔरिया के बारे में ये आयत नाज़िल हुई है ।

الَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّـهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّـهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ

जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात भंग कर देते हैं और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटे में हैं

हज़रत सअद ख़वारिज को फ़ासिक़ कहा करते थे।

(39081) हज़रत मस्अब बिन सअद फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद से ख़वारिज के बारे में सवाल किया गया तो इन्होंने फ़रमाया कि यह वो क़ौम है जिसने टेढ़े रास्ते को इख़्तियार किया तो अल्लाह ने इनके दिलों को टेढ़ा कर दिया।

(39082) हज़रत अबू मरियम फरमाये हैं कि शब्स बिन रब्ई और इब्ने कवाअ कूफ़ा से हरऔराअ की तरफ़ गए, हज़रत अली (رضي الله عنه) ने लोगों को हुक्म दिया कि वो अपने हथियार के साथ निकलें। लोग मस्जिद में आ गए । यहां तक के मस्जिद लोगों से भरी गई। हज़रत अली (رضي الله عنه) ने फ़रमाया कि तुमने हथियारों के साथ मस्जिद में दाख़िल होकर बहुत बुरा किया। तुम सब मैदान में जमा हो जाओ और इस वक़्त तक वहां रहो जब तक मेरा हुक्म तुम्हे ना मिल जाए। अबू मरियम फ़रमाते है कि फिर हम मैदान में चले गए और दिन का कुछ हिस्सा वहां ठहरे फिर हमें ख़बर हुई कि लोग वापस जा रहे हैं।

(2) अबू मरियम कहते हैं कि मैं इनको देखने के लिए इनकी तरफ़ चला। मैं इनकी सफ़ों को चीरता हुआ शबस बिन रब्ई और इब्ने कवाअ तक पहुंच गया, वो दोनों सवारी से टेक लगाए खड़े थे। इनके पास हज़रत अली (رضي الله عنه) के क़ासिद थे । जो इन्हें अल्लाह का वास्ता दे रहे थे । और कह रहे थे कि तुम्हारा अगले साल के आने से पहले फ़ितना मचाने में जल्दी करना ऐसा अमल है जिससे अल्लाह तआला तुम्हे पनाह अता फ़रमाए। ख़वारिज का एक आदमी हज़रत अली (رضي الله عنه) के एक क़ासिद के पास गया और इसकी सवारी को मार डाला। वो आदमी إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون पढ़ता हुआ नीचे उतरा और अपनी ज़ैन को लेकर चल पड़ा। वो दोनों कह रहे थे के हम तो इनसे सिर्फ़ मुक़ाबला चाहते हैं और वो अल्लाह के वास्ते दे रहे हैं।

(3) वो सब कुछ देर ठहरे और फिर कूफ़ा चले गए, वो यौम उल अज़्हा या यौम उल फ़ित्र था, हज़रत अली (رضي الله عنه) इससे पहले हमसे बयान कर रहे थे कि एक क़ौम इस्लाम से ख़ारिज हो जाएगी, वो इस्लाम से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है। इनकी अलामत ये है कि इनमें मफ़लूज हाथ वाला एक आदमी होगा। रावी कहता है कि मैंने हज़रत अली से यह बात कई मर्तबा सुनी है। इस बात को मफ़्लूज हाथ वाले नाफ़अ ने भी सुना। यहां तक कि मैंने इसे देखा कि इसने इस बात को ज़्यादा सुन कर इसकी नागवारी की वजह से खाना खाना भी छोड़ दिया था। नाफ़अ हमारे साथ मस्जिद में था । वह दिन

को नमाज़ पढ़ता था और रात मस्जिद में गुज़ारता था। मैंने इसे एक टोपी पहनाई थी। मैं अगले दिन इसे मिला, मैंने इससे सवाल किया कि क्या वो इन लोगों के साथ निकला था जो हरऔराअ की तरफ़ गए थे ? इन्होंने कहा कि मैं इनका इरादा करके निकला था लेकिन जब में फ़लां क़बीले में पहुंचा तो मुझे कुछ बच्चे मिले जिन्होंने मेरा असलहा छीन लिया। मैं वापस आ गया, एक साल बाद अहले नहरवान निकले और हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) भी इनकी तरफ़ गए मैं इनके साथ नहीं गया।

(4) मेरे भाई अबू अब्दुल्लाह और इनके ग़ुलाम हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के साथ निकले। मुझे अबू अब्दुल्लाह ने बताया कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ख़वारिज की तरफ़ गए, जब नहरवान के किनारे इनके बराबर हो गए तो इनकी तरफ़ आदमी भेजा जो इन्हें अल्लाह का वास्ता दे और इन्हें रुजूअ की दावत दे। मुख़्तलिफ़ क़ासिदों का आना जाना लगा रहा, यहां तक के ख़ारजियों ने हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के क़ासिदों को क़त्ल कर दिया। जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इस सूरते हाल को देखा तो इनसे क़िताल किया। जब सबको तहस नहस करके फ़ारिग़ हो गए तो अपने साथियों को हुक्म दिया कि मफ़लूज हाथ वाले शख़्स को तलाश करें। लोगों ने इन्हें तलाश किया तो एक आदमी ने कहा कि हमें वो ज़िंदा हालत में तो नहीं मिला। एक आदमी ने कहा कि वो इनमें नहीं है। फिर एक आदमी ने आकर ख़ुशख़बरी दी कि अमीलुल मोमिनीन! ख़ुदा की क़सम हमने इसे दो मक़्तूलों के नीचे गिरा हुआ पा लिया है। हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने हुक्म दिया कि इसका मफ़्लूज हाथ काट कर मेरे पास लाओ। जब वो हाथ लाया गया तो हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने इसे बुलंद करके कहा कि ख़ुदा की क़सम.! ना तो मैंने झूठ बोला और ना मुझसे झूठ बोला गया।

(39083) हज़रत अबू मूसा फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) के पास जब मफ़्लूज शख़्स को लाया गया तो आपने सज्दा किया।

(39084) हज़रत हसैन्न फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने ख़वारिज के बारे में फ़रमाया कि अल्लाह इन्हें हलाक करे।

(39085) हज़रत कसीर बिन नमर फ़रमाते हैं कि हम जुमा की नमाज़ पढ़ रहे थे, हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) मिंबर पर थे कि एक आदमी उठा और इसने कहा कि अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म क़बूल नहीं। फिर एक और आदमी खड़ा हुआ और इसने कहा कि अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं। फिर मस्जिद के गोशौं से मुख़्तलिफ़ लोग खड़े होकर यही नारा लगाने

लगे। हज़रत अली (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ने इन्हें हाथ से बैठ जाने का इर्शाद किया। और फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, लेकिन यह कलमाए हक़ है जिससे बातिल का इरादा किया गया है। तुम्हारे बारे में अल्लाह के हुक्म का इंतज़ार किया जा रहा है। इस वक़्त हमारे पास तुम्हारे लिए तीन रिआयतें हैं जब तक तुम हमारे साथ हो, हम तुम्हे अल्लाह की मस्जिदों से मना नहीं करेंगे कि इनमें अल्लाह के नाम का ज़िक्र किया जाए, हम तुम्हे फ़ैअ से भी महरूम नहीं करेंगे जब तक हमारे और तुम्हारे हाथ इकठ्ठे हैं, हम तुमसे इस वक़्त तक क़िताल नहीं करेंगे जब तक तुम हमसे क़िताल ना करो। फिर आपने दोबारा ख़ुत्बा शुरू कर दिया।

(39086) हज़रत अबू बख़्तरी फ़रमाते हैं कि एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ और उसने कहा कि अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं। फिर एक और आदमी खड़ा हुआ और इसने कहा कि अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं। हज़रत अली (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ने ये सुनकर फ़रमाया 'अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं। बेशक अल्लाह का वादा हक़ है और वो लोग आपको हक़ीर ना समझें जो ईमान नहीं रखते। क्या तुम जानते हो कि ये लोग क्या कह रहे हैं ? ये कह रहे हैं कि इमारत नहीं है। ऐ लोगों! तुम्हारे लिए अमीर का होना ज़रूरी है, ख़्वाह वो नेक हो या फ़ासिक़। लोगों ने कहा कि नेक अमीर को तो हमने देख लिया है। फ़ासिक़ कैसा होता है ? हज़रत अली (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि मोमिन अमल करता है और फ़ाजिर को ढील को दी जाती है, अल्लाह तआला मुद्दत तक पहुंचाता है, तुम्हारे रास्ते मामून हैं, तुम्हारे बाज़ार क़ाइम हैं, तुम्हारा माले ग़नीमत तक़सीम किया जाता है, तुम्हारे दुश्मन से जिहाद किया जाता है। ज़ईफ़ का हक़ क़वी से लेकर इसे दिलाया जाता है।

(39087) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) हमारे दर्मियान हुनैन का माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे कि बनू तमीम का एक आदमी आया जिसे ज़ुल ख़वेस्रा कहा जाता था। उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) 'इंसाफ़ कीजिए'। आपने फ़रमाया कि तेरा नास हो, अगर मैं इंसाफ़ ना करूं , तो मेरी नाकामी और नामुरादी में क्या शक है। हज़रत उमर (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इजाज़त दीजिए, मैं इसे क़त्ल कर दूं। आपने फ़रमाया कि नहीं, इसके कुछ साथी हैं जो लोगों के इख़्तिलाफ़ के वक़्त ज़ाहिर होंगे। ये लोग क़ुरआन पढ़ेंगे । लेकिन क़ुरआन इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से इस तरह निकल जाएंगे , जिस तरह

तीर कमान से निकल जाता है। तुम इनकी नमाज़ के सामने अपनी नमाज़ को हक़ीर समझोगे, तुम इनके रोज़े के सामने अपने रोज़े को हक़ीर समझोगे। इनकी निशानी ये होगी कि इनमें औरत के पस्तान जैसे हाथ वाला एक आदमी होगा, जो गोश्त के टुकड़े की तरह लटक रहा होगा। हज़रत अबू सईद (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं कि इस बात को हुनैन के दिन मेरे कानों ने सुना । और हज़रत अली (رضي الله عنه) के हमराह ख़वारिज के ख़िलाफ़ जंग में मेरी आंखों ने देखा कि इसको निकाला गया और मैंने इस अलामत वाले शख़्स को देखा।

(39088) हज़रत उमैर बिन ज़ोज़ी अबू कसीरह फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رضي الله عنه) ने एक दिन हमें ख़ुत्बा दिया, इस ख़ुत्बे में ख़वारिज खड़े हुए और इनकी बात को काट दिया। वो नीचे उतरे और हुजरे में तशरीफ़ ले गए, हम भी इनके साथ अन्दर चले गए। इन्होंने फ़रमाया कि मैं इस दिन खाया गया जिस दिन सफ़ेद बैल खाया गया। फिर फ़रमाया कि मेरी मिसाल इन तीन बैलों और शेर की से है जो एक कछार में जमा हो गए, एक बेल सफ़ेद था, एक सुर्ख़ और एक काला, जब भी शेर उन बैलों को खाने की कोशिश करता वो तीनों जमा हो जाते और शेर का मुक़ाबला करते और शेर को बाज़ रखते। एक दिन शेर ने सुर्ख़ और काले बैल से कहा कि सफ़ेद बैल का रंग इस कछार में हमारी ज़िल्लत सबब है, तुम दोनों ऐसा करो के मुझे वो बैल खा लेने दो, फिर हम तीनों आराम से इस कछार में रहेंगे, मेरा और तुम्हारा रंग भी एक जैसा है। चुनांचे वो दोनों बैल इसके झांसे में आ गए। इस बात को मंज़ूर कर लिया और शेर ने फ़ौरन हमला करके सफ़ेद बैल का काम तमाम कर दिया।

(2) फिर इसके बाद जब कभी वो इन दोनों बैलो में से किसी एक को मारना चाहता तो वो दोनों जमा हो जाते और इसे बाज़ रखते। पस एक दिन शेर ने सुर्ख़ बैल से कहा कि ऐ सुर्ख़ बैल! इस जगह काले के होने की वजह से हमारी इज़्ज़त ख़राब हो रही है। तुम मुझे इजाज़त दो कि मैं इसे खा लूं, फिर तुम और मैं यहां अकेले रहेंगे, मेरा रंग तुम्हारे जैसा है और तुम्हारा रंग मेरे जैसा है। पस सुर्ख़ बैल ने उसे इजाज़त दे दी और इसने काले बैल का क़िस्सा तमाम कर दिया।

(3) फिर वो कुछ देर तक रुका रहा और फिर सुर्ख़ बैल से कहा कि ऐ सुर्ख़ बैल! मैं तुझे खाऊंगा। इसने कहा कि क्या तू मुझे खाएगा! इसने कहा हां मैं तुझे खाऊंगा। बैल ने कहा कि अगर तूने मुझे खाना ही है तो मुझे तीन आवाज़ें निकालने की इजाज़त दे दे। फिर तुम

जो चाहो कर लेना। फिर बैल ने कहा कि मैं तो इसी दिन खाया गया था जिस दिन सफ़ेद बैल खाया गया था।

(4) फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने फ़रमाया कि याद रखो जिस दिन हज़रत उस्मान (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) को शहीद किया गया मैं उसी दिन कमज़ोर हो गया था।

(39089) हज़रत हक्म फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) अहले नहर के माल का ख़ुम्स दिया था।

(39090) हज़रत हक्म फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने अहले नहर के गुलाम और इनका सारा सामान अपने साथियों में तक़सीम कर दिया था।

(39091) बनू तमीम के एक आदमी बयान करते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) से ख़वारिज के माल के बारे में सवाल किया तो इन्होंने फ़रमाया कि इसमें ग़नीमत और ग़लोल नहीं है।

(39092) हज़रत इब्ने इदरीस के दादा बयान करते हैं कि जब अहले नहर पर हमला हुआ तो मंस्जिद गूंज उठी थी।

(39093) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ख़वारिज के बारे में फ़रमाते हैं कि इनसे क़िताल करना मुझे देलम से क़िताल करने से ज़्यादा महबूब है।

(39094) हज़रत सहल बिन हनीफ़ से रिवायत है कि रसूलल्लाह (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ) ने इर्शाद फ़रमाया कि मशरिक़ की एक क़ौम हक़ से हट जाएगी, इनके सर मुंडे हुए होंगे।

(39095) हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने दो हक्म बनाने से मना किया तो अहले हरऔराअ ने कहा कि हम इन लोगों के साथ जमा होने को तैयार नहीं और वो चले गए। फिर इनके पास इब्लीस आया और उसने कहा के वो क़ौम कहां गई जिसे हमने मुसलमान होने की हालत में छोड़ दिया? हमारी राए तो बहुत बुरी राए थी। अगर वो काफ़िर भी होते तब भी हमें इनको साथ रखना चाहिए था! हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि फिर हज़रत अली (رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ) ने ख़वारिज पर हमला कर दिया और इन्हें जड़ से उखेड़ दिया।

(39096) हज़रत हुज़ैय्ल बिन बिलाल फ़रमाते हैं कि मैं मुहम्मद बिन सीरीन के पास था, इनके पास एक आदमी आया और इनसे कहा कि मेरा एक गुलाम है, मैं इसे बेचना चाहता हूं, मुझे इसके छह सौ दिरहम दिये गए हैं, और मुझे ख़वारिज ने इसके आठ सौ दिरहम

दिये हैं, क्या मैं इन्हें बेच दूं ? इन्होंने पूछा कि क्या तुम वो ग़ुलाम किसी यहूदी या नसरानी को बेचना चाहोगे ? मैंने कहा नहीं । इन्होंने फ़रमाया तो फिर इनको भी ना बेचो।

(39097) हज़रत तारिक़ बिन शहाब फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) के पास था, इनसे अहले नहर के बारे में सवाल किया गया कि क्या वो मुशरिक हैं? इन्होंने फ़रमाया कि वो तो शिर्क से भागने वाले हैं। इनसे सवाल किया गया कि क्या वो मुनाफ़िक़ हैं? इन्होंने कहा कि मुनाफ़िक़ अल्लाह का थोड़ा ज़िक्र करते हैं। इनसे कहा गया कि वो क्या हैं? हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) ने फ़रमाया कि वो एक ऐसी क़ौम हैं जिन्होंने हमसे बग़ावत की है।

(39098) हज़रत अर्फ़जा अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अली (رضی اللہ عنہ) के पास अहले नहर के लश्कर का माल व मताअ लाया गया तो इन्होंने फ़रमाया कि जिसको जो चीज़ भली लगे वो ले ले। रावी कहते हैं कि लोगों ने एक हांडी के सिवा सब कुछ ले लिया। बाद में मैंने देखा वो हांडी भी किसी ने ले ली थी।

अद्दाई इल्लख़ैर : नौजवाने एहले सुन्नत इस्लामाबाद [पाकिस्तान]
www.ahlesunnatpak.com